गौरीकाञ्चलिकातन्त्र

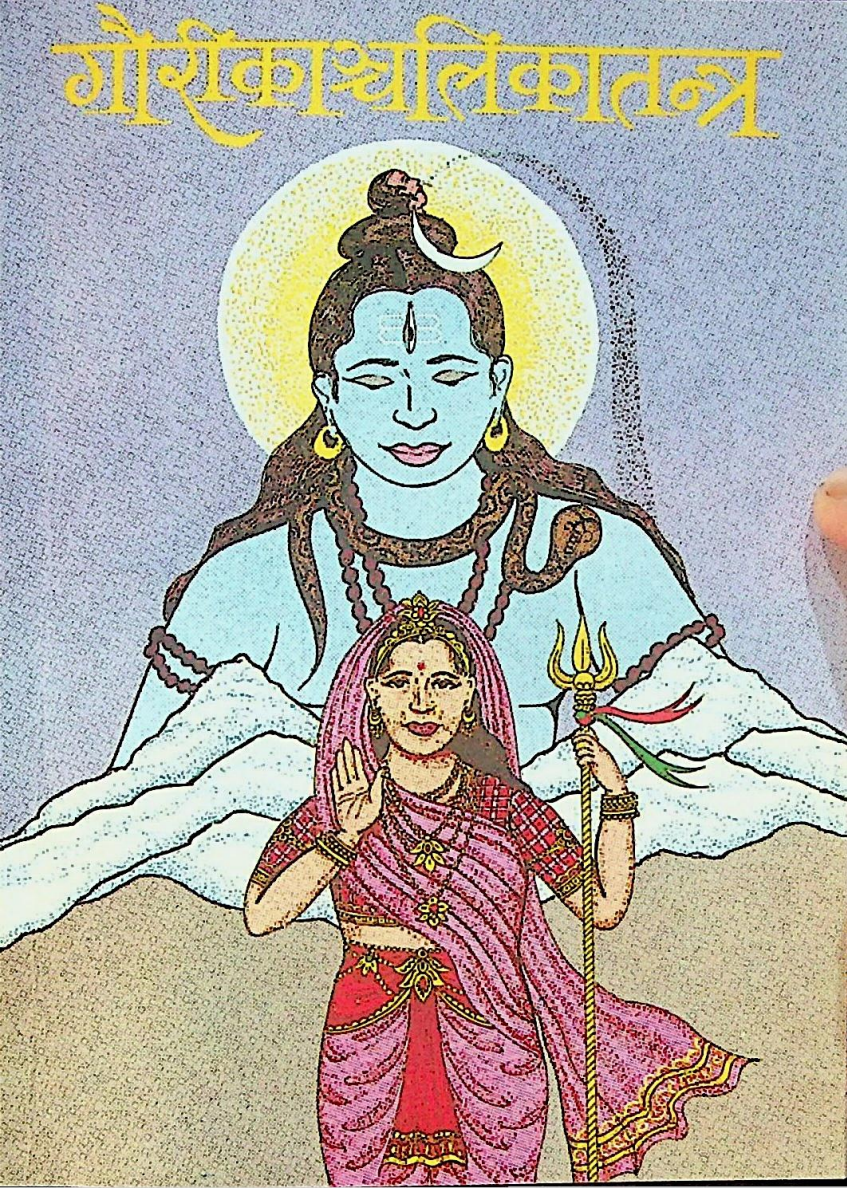

गौरिकांचलिकातन्त्र

श्यामसुन्दरलाल–त्रिपाठीकृत–

भाषाटीकासमेत

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संस्करण : फरवरी २०१४, संवत् २०७०

मूल्य : ४५ रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका।

यद्यपि तन्त्र शब्दके अनेक अर्थ हैं जो शास्त्र पुराण इतिहास आदिमें स्पष्ट विदित होते हैं परन्तु 'तन्त्र' शब्द सुनते ही बुद्धिमें श्रीशिवशिवासंवादरूप तन्त्र शास्त्रका बोध होने लगता है। यह 'गौरीकाञ्चलिकातन्त्र' शिवशिवासंवाद होने पर भी उससे कुछ विलक्षण है। इसमें श्रीभवानीजीने शंकर परमात्मासे लोकोपकारकी बुद्धिसे मनुष्योंको रोग, शोक और मृत्युके भयसे बचानेके लिये प्रश्न किया है, उसके उत्तरमें श्रीशंकरजीने ज्वरादि रोगोंपर नाना प्रकारके कल्प कहे हैं, यद्यपि कन्द, मूल, वनस्पति आदियोंमें नाना प्रकारकी शक्ति स्वतः सिद्ध है और उनके प्रयोगसे गुण भी होता है, परन्तु तिथि, नक्षत्र, वार, ऋतु इत्यादिके नियमसे उनका खनना उखाडना, इत्यादि क्रियासे उनमें विशेष बल आजाता है। जैसा शरद और हेमन्तमें वृक्षोंकी छाल और जडको लेना, शिशिरमें फल वसन्तमें फूल और पत्ती इत्यादि। यह शरीर रक्षणका अच्छा उपाय है इन सब बातोंको कहकर कितने ही निमित्त इसमें ऐसे बनाये हैं कि जिनसे मनुष्यको अपने आयुष्यका ज्ञान होजाता है। जिससे वह नाना प्रकारके उपाय करसकता है, और कई कल्प इसमें ऐसे बनाये गये हैं कि जिनके विधिपूर्वक सिद्ध करनेसे मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्युके भयको भी जीत सकता है। इस प्रकार बडे बडे कल्प कह कर युवा युवतियोंके देहरागके लिये उबटन, शरीरको सुडौल तथा रमणीय बनानेके उपाय, वशीकरणप्रयोग, स्मृतिशक्ति बढाने तथा

उत्तम स्वर होनेके उपाय नाना प्रकारके अञ्जन लक्ष्मी वृद्धिके उपाय इत्यादि अनेक उपयोगी विषय कहे हैं सर्व साधारण लोग इसको भलीभाँति समझसकें इस अभिप्रायसे मुरादाबादनिवासी पण्डित श्यामसुन्दरजी त्रिपाठी द्वारा इसकी सरलशुद्ध भाषाटीकाभी कराई गयी है इस पुस्तककी हमको एकही प्रति मिली, उसके पाठ लेखन क्रमसे प्रायः अशुद्ध होगये थे, जहांतक टीकाकार तथा हमारे यन्त्रालयके विद्वानोंको निस्सन्देह पाठ विदित होसके वह शुद्ध करदिये गये हैं और कहीं कहीं प्राचीन पाठ जो कि असङ्गतसे जानपडे जैसेके तैसे छाप दिये गये, जो विद्वान् उनको शुद्ध करके भेजेंगे हम तृतीयावृत्तिमें उनको सुधारकर छापदेंगे । इस द्वितीय संस्करणको और भी शुद्धतापूर्वक छापा है । आशा है कि लोग इस पुस्तकको खरीदकर लाभ उठावेंगे.

भवदीय कृपाकांक्षी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्—प्रेस, बंबई.

अथ गौरीकांचलिकातन्त्रविषयानुक्रमणिका ।

विषय.					पृष्ठ.
१ मंगलाचरणम्	...	...	...	...	१
२ देवीप्रश्नः औषधं प्रति		...	...	...	,,
३ औषधोत्पाटनविधिः		...	...	...	३
४ रोगजन्मनक्षत्रफलम्		...	...	...	५
५ देवीप्रश्नः चिह्नंप्रति		...	...	...	९
६ कालचिह्नानि	...	...	...	...	१०
७ औषधोत्पाटने नक्षत्रादि		...	...	...	२७
८ ऋतुभेदः	...	...	...	...	२८
९ चित्रकल्पः	...	...	...	...	३०
१० मण्डूकपर्णीकल्पः	...	...	...	...	३१
११ पुनर्नवाकल्पः	...	...	...	...	३३
१२ निर्गुण्डीकल्पः	...	...	...	...	३४
१३ भक्षणमन्त्रः	...	...	...	...	४०
१४ हस्तिकर्णकल्पः	...	...	...	...	४२
१५ श्वेतार्ककल्पः	...	...	...	...	४७
१६ भृंगराजकल्पः	...	...	...	...	५१
१७ काछकाकल्पः	...	...	...	...	५२
१८ अम्लालोनीकल्पः	...	...	...	...	५३
१९ शाल्मलीकल्पः	...	...	...	...	,,

विषय.	पृष्ठ.
२० अभयाकल्पः	५७
२१ औषधभक्षणे नक्षत्रनियमः	५८
२२ देवीप्रश्नः नाडीः प्रति	५९
२३ नाडीकथनम्	,,
२४ ज्वरचिकित्सा	६१
२५ ज्वरनाशनमन्त्रः	६३
२६ छेदमन्त्रः	६४
२७ बहुमूत्रचिकित्सा	६८
२८ मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा	६९
२९ बिन्दुक्षयचिकित्सा	७०
३० कुरण्डचिकित्सा	७१
३१ कुरण्डगलगण्डचिकित्सा	७२
३२ भगन्दरचिकित्सा	७३
३३ कामलाचिकित्सा	,,
३४ वैवर्ण्यचिकित्सा	७४
३५ कासचिकित्सा	,,
३६ क्षयकासाचिकित्सा	७५
३७ नासार्शश्चिकित्सा	७६
३८ गुदार्शश्चिकित्सा	,,
३९ कर्णशूलचिकित्सा	७७
४० चक्षूरोगचिकित्सा	७८

विषय.				पृष्ठ.
४१ शिरोरोगचिकित्साः	...	...	...	७९
४२ पद्मगन्धचिकित्साः	...	...	...	८०
४३ दन्तरोगचिकित्साः	...	...	...	,,
४४ अतीसारचिकित्साः	...	...	...	८१
४५ परिणामशूलचिकित्साः	...	...	...	८२
४६ विचर्चिकाचिकित्साः	...	...	...	८३
४७ कुष्ठरोगचिकित्साः	...	...	...	८४
४८ प्लीहारोगचिकित्सा	...	...	...	८६
४९ विस्फोटकचिकित्साः	...	...	...	,,
५० अर्बुदरोगचिकित्सा	...	...	...	८७
५१ दग्धव्रणचिकित्सा	...	...	...	,,
५२ श्लीपदचिकित्सा	...	...	...	८८
५३ निद्रामोक्षोपायः	...	...	...	८९
५४ निद्राचिकित्सा	...	...	...	९०
५५ अदृश्योपायः	...	...	...	९२
५६ भेल्की	...	...	...	९३
५७ अदृश्यनिधिदर्शनोपायः	...	...	...	९४
५८ निगडभंगप्रयोगः	...	...	...	९५
५९ कालीसाधनम्	...	...	...	,,
६० देहदुर्गन्धहरणम्	...	...	...	९७
६१ देहसौगन्ध्यजननम्	...	...	...	,,
६२ कान्तिजननम्	...	...	...	९८

विषय.				पृष्ठ.
६३ पुष्टिजननम्	...	...	...	९९
६४ मुखसौगन्ध्यजननम्	...	...	...	,,
६५ सुस्वरजननम्	...	...	...	१००
६६ लोमपातनम्	...	...	...	,,
६७ केशवैवर्ण्यहरणम्	...	...	...	१०१
६८ स्तनगुणाधानम्	...	...	...	,,
६९ सौभाग्यजननम	...	...	...	१०३
७० वरांगलेपः	...	...	...	१०४
७१ स्त्रीवशीकरणम्	...	...	...	१०६
७२ दम्पतिप्रीतिजननम्	...	...	...	१०९
७३ जगद्वशीकरणम्	...	...	...	१११
७४ तिलककरणमन्त्रः	...	...	...	११३
७५ मोहनम्	...	...	...	११४
७६ वीर्यजननम्	...	...	...	११७
७७ बलवर्द्धनम्	...	...	...	११९
७८ श्रुतिधारणम्	...	...	...	१२०
७९ अस्त्रस्तम्भनम	...	...	...	,,
८० गात्रस्पन्दनकथनम्	...	...	...	,,
८१ तन्त्रसमाप्तिः	...	...	...	१२३

इति गौरीकाञ्चलिकातन्त्रविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

गौरीकाञ्चलिका तंत्र ।

भाषाटीकासमेत ।

—०(०)०—

मंगलाचरणम् ।

गुणत्रयविभेदेन मूर्तित्रयमुपेयुषे ।
त्रयीभुवे त्रिनेत्राय त्रिलोकीपतये नमः ॥१॥

जो सत्त्व, रज, तम इन तीन गुणोंके विभागके निमित्त ब्रह्मा विष्णु महेश यह तीन मूर्ति धारण करतेहैं, उन ऋक्,यजु, साम इन तीनों वेदोंके सृष्टिकर्ता त्रिलोकपति त्रिलोचनके निमित्त नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

ज्ञातं भवत्प्रसादेन यथा कालस्य वञ्चनम् ।
मन्त्रस्य सारसंभूतमिदानीमौषधं वद ॥ १ ॥

देवी बोली हे देव ! मैंने आपके प्रसादसे जिस प्रकार कालकी वंचना करतेहैं सो जानलीहै इससमय मंत्रकी सार-भूत औषध कहकर मेरे कौतुकको शांत कीजिये ॥१॥

येन सिद्ध्यन्ति देहानि सन्ति तानि हिताय च।
ज्वररोगहरं कल्पं तद्वद त्रिपुरान्तक ॥ २ ॥

हे त्रिपुरांतक ! जिस औषधसे कल्पद्वारा शरीरकी स्वास्थ्यरूप सिद्धिका लाभ होता है, और देह स्थायी होकर सब प्रकारका हित साधन करता है, जरा और रोगहारी उस भेषजकल्पको वर्णन करो ॥ २ ॥

सन्त्यौषधान्यनेकानि मनुष्याणां हिताय च ।
पूर्व्वन्तु यत्त्वया प्रोक्तं प्रत्यक्षं कथयस्व मे ॥३॥

पृथ्वीमें मनुष्यजातिके हितसाधनके निमित्त अनेक प्रकारकी औषधियें हैं यह बात आपने पहले कही थी इस समय उनका विशेष साक्षात्कार मुझसे वर्णन कीजिये ॥ ३ ॥

श्रीईश्वर उवाच ।

तिथिनक्षत्रवारैस्तु ऋतुभेदैः परिग्रहम् ।
खननोत्पाटनं मन्त्रैः कारयेद्वै चिकित्सकः ॥ ४ ॥

शिवजी बोले हे देवि! वार तिथि नक्षत्र और ऋतुभेदसे औषधि विशेष ग्रहण करना, मंत्रपाठपूर्वक भूमि खोदना और औषधि उखाड़ना चिकित्सकका कर्त्तव्य है ॥४॥

औषधङ्कालयोगेन गह्णाति परमं बलम् ।
शरद्धेमन्तयोर्देवि त्वचो मूलस्य संग्रहः ॥५॥

श्रेष्ठ काल योगमें औषधि विशेष बल धारण करती है. हे देवि ! शरद् और हेमन्त कालमें वृक्षादिकी त्वचा और मूल संग्रह करै ॥ ५ ॥

शिशिरे च फलं सम्यङ् मूलं सारसमन्वितम् ।
वसन्ते पुष्पपत्रञ्च ग्रीष्मे च फलबीजके ॥ ६ ॥

शिशिरमें फल और मूल अच्छीतरह बलयुक्त होतेहैं इस कारण उक्त कालमेंही फलमूल संग्रह करै, वसन्त-

कालमें फूल और पत्ते और ग्रीष्ममें फल और बीज संग्रह करै ॥ ६ ॥

स्वकाले बलवन्तोऽपि वर्षासु तरवः सदा ।
मूले शुष्के बलं चार्द्धं मूलादौ भेषजे तथा॥७॥

वृक्ष अपने२कालमें बलवान् होते हैं और ग्रीष्मकालमें वृक्षादिका मूल सूखा हुआ होता है, इस कारण प्रायः वर्षामें मूलादि तथा औषध आधा बल धारण करती है ॥ ७ ॥

ग्रीष्मवार्षिकयोरेतच्छरत्सम्पूर्णदं भवेत् ॥ ८ ॥
वृक्षादीनां फलं बीजं स्वकीये च ऋतौ तथा ।
बलवत्परितः सर्व्वा ओषध्यः परिकीर्तिताः॥९॥

यह ग्रीष्म और वर्षाकालका गुण कहागया शरत्काल औषधीके पक्षमें सम्पूर्ण बलदायक है॥८॥ वृक्षादिका फल और बीज तथा सब प्रकारकी औषधियें अपनी २ ऋतुमें पूर्ण बलवान् होती हैं ॥ ९ ॥

जलजा स्थलजा वृक्षा लताश्चापि तथैव च।
ग्राम्यारण्या गुल्मवल्ली ओषध्यः परिकीर्तिताः।
जातिद्रव्यगुणैर्युक्तमौषधं व्याधिसंक्षयम् ॥१०॥

जलज, स्थलज, वृक्ष और लतायें ग्राम्य; आरण्यक गुल्मलतादि यह औषधियें विशेष बलवान् होतीहैं, जाति द्रव्य और गुणयुक्त औषधि होनेसे रोग नष्ट करती है १०॥

फलपुष्पलता एव स्वकाले बलिनस्तथा।
निशायां जलजावीर्याः स्थलजाबलिनोदिवा ११

फल फूल और लतामात्र अपने २ कालमें बलवान् होती हैं, रातमें जलज (जलमें उत्पन्न हुई) और दिन में स्थलज (पृथ्वीमें उत्पन्न हुई) औषधियें वीर्यवान् होती हैं ॥ ११ ॥

अथ रोगजन्मनक्षत्रफलम्।

कृत्तिकायां कदाचिद्वै व्याधिरुत्पद्यते क्वचित्।
नवरात्रं भवेत्पीडा त्रिरात्रं रोहिणीषु च ॥१२॥

जिस नक्षत्रमें रोग उत्पन्न हो उसका फल कहते हैं । यदि कृत्तिका नक्षत्रमें रोग उत्पन्न हो तब नौ रात्रि पीड़ा भोगनी पड़ती है, रोहिणी नक्षत्रमें पीड़ा होनेसे तीन रात ॥ १२ ॥

मृगशीर्षे पञ्चरात्रमार्द्रा प्राणैर्विमुच्यते ।
पुनर्वसौ तथा पुष्ये सप्तरात्रं विधीयते ॥ १३॥

मृगशिरमें पीडा होनेसे पांचरात,आर्द्रा नक्षत्रमें पीडा होनेसे रोगीकी मृत्यु होती है, पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्रमें रोगोत्पत्ति होनेसे सातरात पीडा भोगनी पडती है॥ १३॥

नवरात्रं तथाश्लेषा श्मशानांतं मघासु च ।
द्वौ मासौ पूर्व्वफाल्गुन्युत्तरासु च त्रिपञ्चकम् १४

आश्लेषामें नवरात्रि भोगनी पडती हैं । मघा नक्षत्रसे पीडा होनेसे मृत्यु होती है, पूर्वाफाल्गुनीमें पीडा होनेसे दो मास भोगनी पडती है और उत्तरा फाल्गुनीमें पंद्रह दिन भोगनी पडती है ॥ १४ ॥

हस्ते च सप्तमे मोक्षः चित्रायामर्द्धमासकम् ॥
मासद्वयं भवेत्स्वात्यां विशाखे विंशतिर्दिनम् १५

हस्त नक्षत्रमें रोग उत्पन्न होनेसे सात दिनमें आरोग्य होता है। चित्रामें आधे मास, स्वाति नक्षत्रमें दो महीने और विशाखामें बीस दिन पीडा भोगनी पडती है॥ १५॥

मैत्रे चापि दशाहानि ज्येष्ठायामर्द्धमासकम् ।
मूलेन जायते शेषं पूर्वाषाढा त्रिपञ्चकम्॥१६॥

अनुराधामें दस दिन, ज्येष्ठामें आधे महीने, मूलमें मृत्यु और पूर्वाषाढ़में पंद्रह दिन ॥१६॥

ऊनविंशोत्तराषाढा द्वौ मासौ श्रवणस्तथा ।
धनिष्ठायामर्द्धमासो वारुणे च दशाहिकम् १७॥

उत्तराषाढ़ामें उन्नीस दिन, श्रवणमें दो महीने, धनिष्ठासे आधे महीने, शतभिषामें दस दिन ॥ १७ ॥

पूर्वभाद्रपदे देवि ऊनविंशतिवासरान् ।
त्रिपक्षं चाप्यहिर्बुध्ने रेवत्यां दशरात्रकम्॥१८॥

पूर्वाभाद्रपदमें उन्नीस दिन, उत्तराभाद्रपदमें तीन पखवाडे, रेवतीमें दस रात ॥ १८ ॥

अहोरात्रं चाश्विनी च भरण्याञ्च गतायुषम् ।
एवं क्रमेण जानीयान्नक्षत्रेण यथोदितम् ॥१९॥

अश्विनीमें एक दिन और एकरात पीडा भोगनी होती है और भरणी नक्षत्रमें पीडा होनेसे आयुका शेष अर्थात् मृत्यु होती है, इस प्रकार नक्षत्र दोषमें रोगका भोग और विनाश होता है ॥ १९ ॥

उरगशतभिषार्द्रास्वातिमूलत्रिपूर्व्वाः शनिरवि-कुजवाराः क्रूरताराविरुद्धाः । यदि भवति चतुर्थी चाष्टमी भूतषष्ठी प्रकथयति विशेषाद्रोगिणां मृत्युकालम् ॥ २० ॥

यदि शनि, रवि और मंगल वारमें पीडा होय और मघा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति, मूल, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ और पूर्वाभाद्रपद इन संपूर्ण नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र हो

और ताराभी विरुद्ध हो, चतुर्थी अष्टमी और पंचमी, षष्ठी इन सम्पूर्ण तिथियोंमेंसे कोई तिथि हो तौ रोगीकी मृत्यु होती है ॥ २० ॥

पञ्चमी चन्द्रवारे च द्वितीया च बृहस्पतौ।
शुक्रे चैव चतुर्थ्यां तु रोगिणां मृत्युमादिशेत्२१

यदि सोमवारी पञ्चमी बृहस्पतिवारी द्वितीया और शुक्रवारी चतुर्थीमें पीड़ा हो उससे भी मृत्यु होती है।२१।

सप्ताहं वारयोगेन त्रिगुणं तिथिसंयुतम्।
तिथिनक्षत्रयोर्मासं त्रिभिर्युक्ते न जीवति।२२।

दुष्ट वारयोगमें सप्ताह, दुष्ट तिथियोगमें इक्कीस दिन, तिथिनक्षत्रयोगमें एक मासतक पीड़ा भोगनी होती है. किन्तु दुष्ट वार तिथि नक्षत्र तीनों योगोंमें पीड़ा होनेसे निश्चय मृत्यु होती है ॥ २२ ॥

श्रीदेव्युवाच।

यानि चिह्नानि मरणान्नृणां पूर्वं भवंति हि।
तानि चिह्नानि कतिचिद्ब्रूहि मे जगदीश्वर ॥२३॥

देवी बोली हे जगदीश्वर ! मृत्युके पहले मनुष्यके जो जो चिह्न होते हैं तिनको कहिये ॥ २३ ॥

ईश्वर उवाच ।

वदामि कालचिह्नानि जायंते यानि देहिनः ।
मृत्यौ निकटमापन्ने तत्रैतानि निशामय॥२४॥

शिवजी बोले हे देवि!मृत्युकालमें मनुष्यके जो जो लक्षण उपस्थित होते हैं तिनको कहताहूं श्रवण करो, मृत्यु निकट होनेपर यह सम्पूर्ण चिह्न दीखतेहैं॥२४॥

यस्य नासापुटे वायुर्दक्षे वाति दिवानिशम् ।
अखण्डमेव तस्यायुः क्षरेदह्नां त्रयेण हि॥२५॥

जिसके दाहिने नाकके छिद्रसे वायु निरंतर निकले उसकी आयु अखंड होनेपरभी तीन दिनमें क्षयको प्राप्त होती है ॥ २५ ॥

द्व्यहोरात्रं त्र्यहोरात्रं वायुर्वहति सन्ततम् ।
सार्धैकमासं तस्यैतज्जीवितं खलु चोच्यते २६

जिसकी नासिकासे दो या तीन अहोरात्र वायु निकले वह डेढ महीनेसे अधिक नहीं जीता ॥ २६ ॥

बहिर्नासापुटे युग्मे दशाहानि निरंतरम् ।
वायुश्चेत्सहसंक्रान्तः स जीवति दिनद्वयम्॥२७॥

जिसकी बाहिरी नासिकाके छिद्रोंद्वारा निरंतर दशरात्रि वायु चलै वह दो दिन मात्र जीता है॥२७॥

नासावर्त्मद्वयं हित्वा यस्य वायुर्मुखाद्वहेत् ।
स वै दिनद्वयं स्थित्वा ततो यमपुरं व्रजेत्२८॥

जिसका वायु नाकके मार्गको छोड़कर केवल मुखसे निकले वह दो दिन रहकर यमपुरमें गमन करता है२८

सूर्य्ये सप्तमराशिस्थे जन्मसंस्थे निशाकरे ।
पूर्णः स कालो द्रष्टव्योयदि याम्ये वहेद्विः२९

यदि सूर्य जन्मराशिसे सप्तम राशिपर स्थित हो और चन्द्रमा जन्मराशिपै स्थित हो और केवल नाकके दहिने छेदसे स्वांस चलै तो जान लो कि उसका समय पूर्ण होगया है ॥ २९ ॥

अकस्माद्वीक्षते यस्तु पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।
तस्मिन्नेव क्षणे रूपं स जीवेद्वत्सरद्वयम् ॥३०॥

जो मनुष्य अकस्मात् काले और पीले वर्णके पुरुषको देखै और उसी समय अपना शरीर देखले वह दो वर्षतक जीता है ॥ ३० ॥

यस्य वीर्यं मलं मूत्रं क्षतं शुक्रमनन्तरम्
इहैकदा भवेद्वापि ह्यब्दं तस्यायुरुच्यते ॥३१॥

जिसका वीर्य मल मूत्र एकसाथ गिरै वह एक वर्षतक जीता है ॥ ३१ ॥

इन्द्रनीलनिभं व्योम्नि नगे धूम्रं समीक्षते ।
इतस्ततः प्रसृमरं षण्मासञ्च स जीवति॥३२॥

जो मनुष्य आकाशमें नीलमणीकी समान धूम्र वर्ण और पर्वतमें धूम्र इधर उधर विस्तारसे देखै वह छः महीने जीता है ॥ ३२ ॥

अरुन्धतीं ध्रुवं चैवं विष्णोस्त्रीणि पदानि च।
आसन्नमृत्युर्नोपश्येच्चतुर्थं वायुमंडलम् ॥ ३३ ॥

जिसकी मृत्यु निकट होती है उसे अरुंधती तारा तथा ध्रुवका तारा और वायुमंडल नहीं दीखता॥३३॥

भाद्रेऽह्नि वारे सूर्य्यस्य पुष्टीकृत्य दिवादिकम्।
प्रकृत्याप्सु च पश्येद्वा षण्मासैःसतुमृत्युभाक्३४

जो मनुष्य भाद्रपद मासमें रविवारके दिन जल प्रकृतरूप दिवादि देखै तो छः महीनेके बीचमें उसकी मृत्यु होती है ॥ ३४ ॥

वेत्ति नीलादिवर्णस्य कट्वम्लादिरसस्य च।
अकस्मादन्यथाभावं षण्मासेन स मृत्युभाक्३५

जो मनुष्य नीलादि वर्ण अथवा अम्लादि वर्ण रसको और तरहसे बूझै अर्थात् खट्टेको मीठा और मीठेको खट्टा समझै वह छः महीनेमें कालके ग्रासमें गिरता है३५

षण्मासं मृत्युलोकस्य कण्ठोष्ठरसना रदाः ।
शुष्यन्ति सततं तद्वद्विच्छायस्यानुपश्चमात् ३६॥

जिसके कंठ होठ जीभ दांत और शरीर सदा सूखे रहैं और शोभाहीन हो तो छः महीनेके बीचमें उसकी मृत्यु होती है ॥ ३६ ॥

रेतःकवचनेत्रान्ता मलिमानं भजन्ति वै ।
तर्हि कीनाशनगरं षष्ठे मासि व्रजेन्नरः ॥ ३७ ॥

जिसके वीर्य शरीर और आंखोंके कोने मलिनताको प्राप्त होजांय वह पांच महीनेके पश्चात् यमलोकको जाता है ॥ ३७ ॥

संप्रवृत्ते निधुवने मध्ये श्वसिति यो नरः ।
निश्चितं पञ्चमे मासि धर्मराजातिथिर्भवेत् ३८॥

जो मनुष्य स्त्रीसंभोगमें प्रवृत्त होकर मध्यसमयमें हांफता है उसकी मृत्यु पांच महीनेमें होती है ॥ ३८ ॥

द्रुतमारुह्य शकटं तिर्यक् कस्याश्च मस्तकम् ।
ध्रुवं प्रयाति तस्यायुः षण्मासैः परिसंक्षयम् ३९॥

जो मनुष्य छकडेमें शीघ्रतासे बैठजाय और उसी समय उसका मस्तक घूमजाय तो छः महीनेके बीचमें उसकी मृत्यु होगी ॥ ३९ ॥

सुस्नातस्यापि यस्याशु हृदयं परिशुष्यति।
चरणौ च करौ चापि त्रिमासं तस्य जीवितम्॥४०

अच्छीतरह स्नान करनेपरभी जिसका हृदय तथा हाथ पैर तुरन्तही सूख जांय उसकी आयु तीनमहीने तक जानो ॥ ४० ॥

प्रतिबिम्बं भवेद्यस्य पदं खण्डपदाकृति।
पांसौ वा कर्दमे वापि पञ्चमासान्न जीवति॥४१॥

जिसके पैरके चिह्न धूरि वा कीचमें टूटे फूटे दीखैं वह पांच महीनेसे अधिक नहीं जीता ॥ ४१ ॥

देहः प्रकम्पते यस्य देहरन्ध्रेपि निश्चले।
कृतान्तदूता बध्नंति चतुर्थे मासि तं नरम्॥४२॥

देहके छेद निश्चल होनेपरभी जिसकी देह कांपै यमदूत चौथे महीनेंमही उसको बांधकर लेजाते हैं॥४२॥

निजस्य प्रतिबिम्बस्य निश्चले उदकादिषु।
उत्तमाङ्गं न पश्येद्यः स मासेन विनश्यति ४३॥

यदि निश्चल जलमें अपनी परछाईं गिरीहुई दीखै और उसमें मस्तक न दीखै तो एकही महीनेमें उसका विनाश होता है ॥ ४३ ॥

मतिभ्रंशं स्थले वापि धनुरैन्द्रं न पश्यति।
रात्रौ चन्द्रद्वयं वापि दिवा द्वौ च दिवाकरौ४४
दिवा चतारकाचक्रं रात्रौ व्योम्नि विभावसुम्।
युगपच्च चतुर्दिक्षु शक्रकोदण्डमंडलम् ॥४५॥

स्थलमें मतिभ्रम, इन्द्र धनुषका न दीखना, रात्रिमें आकाशके बीच दो चन्द्रमाओंका दीखना, दिनमें दो सूर्य और ताराचक्र देखना, रातके समय आकाशमें अग्नि देखना, एक समयमेंही चारों दिशाओंमें इन्द्रधनुष मंडलका दीखना ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

भूधरे भूधराग्रे वा गन्धर्व्वनगरालयम्।
दिवानिशञ्च नृत्यं च एते पञ्चत्वहेतवः॥ ४६॥

पर्वतमें वा पर्वतके अग्रभागमें गंधर्वनगर और भवन दीखना और दिनमें तथा रातमें नृत्य दीखना, यह मृत्युके कारण हैं॥ ४६॥

करावरुद्धश्रवणः संशृणोति न च ध्वनिम्।
स्थूलःकृशःकृशःस्थूलस्तदा मासान्निवर्त्तते४७॥

जो दोनों कानोंपर हाथ ढककर शब्दको न सुनसके और मोटेसे दुबला होजाय और दुबलेसे मोटा होजाय तो एक मासके मध्यमें उसकी मृत्यु होजाती है॥४७॥

यः पश्येदात्मनश्छायां दक्षनासासमाश्रिताम्।
दिनानि पञ्च जीवित्वा पञ्चत्वमुपयाति सः४८

जो दक्षिण नासाके अग्रभागमें अपनी छाया देखपावै उसकी मृत्यु पांच दिनमें होती है॥ ४८॥

प्रेक्षते भक्षितं देहं पिशाचासुरवायसैः।
भूतैः प्रेतैः श्वभिर्गृध्रैर्गोमायुमृगशूकरैः॥४९॥

शरभैः शलभैः श्येनैरश्वैर्वा तित्तिरैर्वृकैः ।
स्वप्ने संजीवितं दृष्ट्वा वर्षान्ते यममीक्षते ॥५०

जो मनुष्य स्वप्नावस्थामें पिशाच, असुर, राक्ष
भूत, प्रेत, कुत्ता, गिद्ध, गीदड़, सूअर, शरभ, टीड
बाज, घोड़ा, तीतर, भेड़िया, इन संपूर्ण जंतुओंमें कि
एकको देखे वा भक्षण करै वह जीवनको त्यागव
एक वर्षमें यमका दर्शन करता है ॥ ४९ ॥ ५० ।

गन्धपुष्पांशुके रक्तैः स्वमंगं भूषितं नरः ।
यः पश्येत्स्वप्नसमयेऽष्टौ मासान्न स जीवति५

जो मनुष्य स्वप्नमें लालवर्ण गंध पुष्प और वस्त्र
अपना शरीर आभूषित देखै वह आठ महीनेसे अधि
नहीं जीता ॥ ५१ ॥

पांशुराशिं च वल्मीकं यूपदण्डमथापि वा
योऽधिरोहति वै स्वप्ने सोष्टमासात्प्रणश्यति५

जो मनुष्य स्वप्नमें ढेर, वल्मीक और खंभ दंडमें चढ़ै वह आठ महीनेके पश्चात् नष्ट होता है ॥ ५२ ॥

रासभारूढमात्मानं तैलाभ्यक्तञ्च मण्डितम् ।
यः पश्येत्स्वप्नसमये यमलोकं स गच्छति५३॥

जो मनुष्य स्वप्नमें तेल मले, शोभायमान शरीरको देखे और अपनेको गधेपर चढ़ाहुआ देखे उसकी मृत्यु होती है ॥ ५३ ॥

स्वयोनौ स्वतनौ वापि यः पश्येत्स्वप्नगोचरः ।
तृणानि शुष्ककाष्ठानि षष्ठे मासे न तिष्ठति५४

जो स्वप्नकालमें अपनी योनि वा देहमें तृण वा सूखा काठ देखे तो छः महीनेमें उसकी मृत्यु होती है॥५४॥

लौहदण्डधरं कृष्णं पुरुषं कृष्णवाससम् ।
स्वयं यो ग्रसितं पश्येत्स त्रिमासान्न लंघयेत्५५

जो मनुष्य स्वप्नकालमें लोहदंडधारी कृष्णवर्ण काले वस्त्रधारी पुरुषके साथ अपने आपको ग्रसित देखे तो उसकी मृत्यु तीन महीनेमें होती है ॥५५॥

कालीं कुमारीं यः स्वप्ने बंधीयाद्बाहुपाशकैः
स मासेन च ईक्षेत नगरीं शमनाश्रयाम्॥५६

जो मनुष्य स्वप्नमें काले वर्णकी कुमारीको बाहु
पाशसे बंधन करै वह छः महीनेके मध्यमें यमभवनक
दर्शन करता है ॥ ५६ ॥

नरो यो वानरारूढो गच्छेत्प्राचीं दिशं स्वपन्
दिनैः स पंचभिर्वीक्षेन्नगरीं शमनाश्रयाम् ॥५७
न तस्य रक्षणे शक्तो देवोपि परितोषितः ।
अवश्यं मृत्युमाप्नोति नात्रकार्या विचारणा॥५८

जो स्वप्नावस्थामें बन्दरकी पीठपर चढ़कर पू
दिशाको जाय वह पांच दिनके मध्यमें यमभवनक
जाता है उसकी रक्षा करनेके लिये देवता क्यों
आजाय तबभी वह अवश्य मरजाता है ॥५७॥५८

कृपणोऽपि वदान्यो वा वदान्यः कृपणोपि व
प्रकृतेर्विकृतिश्चेत्स्यात्तदा पंचत्वमाप्नुयात्॥५९

यदि कृपण एकसाथही दाता होजाय और दाता एकही साथ कृपण होजाय, तथा एकसाथही प्रकृतिका विकार होजाय तो जानलो कि उसकी मृत्यु होगी५९॥

देवमार्गं ध्रुवं शक्रं सोमच्छायामरुन्धतीम्।
यो न पश्यति दूरस्थो न जीवेद्वत्सरात्परम्६०

जो दूरमें स्थित होकर आकाश, ध्रुवका तारा, इन्द्रका धनुष, चन्द्रकी छाया और अरुन्धतीको न देख-पावै वह एक वर्षसे अधिक नहीं बचता॥ ६०॥

विरश्मिबिम्बं सूर्यस्य वह्निं चैवांशुमालिनम्।
दृष्ट्वैकादशमासाच्च न चोर्ध्वं स च जीवति॥६१॥

जो मनुष्य सूर्यबिम्ब किरणशून्य और चंद्रमाको अग्निके समान देखै वह ग्यारह महीनेसे अधिक नहीं बचता॥ ६१॥

हन्यते काकपंक्त्या यः पांशुर्वर्षति वामतः।
स्वच्छायामन्यथा पश्येच्चतुःपंच स जीवति ६२

काक समूह मिलकर जिसको ठुकराकर चले औ
जिसके बांई ओरसे धूरि वर्षे वह चार पांच महीं
जीता है ॥ ६२ ॥

अशुभां विद्युतं दृष्ट्वा दक्षिणां दिशमाश्रिताम्
तथा शक्रधनुर्व्वापि जीवितं च त्रिमासिकम्६३

जो मनुष्य दक्षिण दिशामें काले वर्णकी बीजल
वा इन्द्रके धनुषको देखे वह तीन महीनेसे अधि
नहीं बचता ॥ ६३ ॥

घृते तैले तथाऽऽदर्शे तोये च तनुमात्मनः ।
यः पश्येदशिरस्कान्तु मासादूर्ध्वं न जीवति६४

जो मनुष्य घी, तेल, दर्पण वा जलमें अपनी
परछांईको मस्तकहीन देखे वह एक महीनेसे अधि
नहीं बचता ॥ ६४ ॥

यस्य वक्त्रे प्रेतगन्धो गात्रे वसनयोरपि ।
तस्यार्द्धं मासिकं ज्ञेयं योगिनोपि हि जीवनम्६५

जिसके मुखमें,शरीरमें और वस्त्रमें मुरदेकी गंध आती
ो तो वह चाहे योगी भी हो तो भी आधे महीनेसे
धिक नहीं बचता ॥ ६५ ॥

स्य वै स्नातगात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति।
ीतं चापि जलं पश्येद्दशाहं तस्य जीवनम्॥६६

स्नान करनेसे भी जिसके गाल सूखजाँय और जो
जलको पीला देखै वह दस दिन जीता है॥ ६६ ॥

ऋक्षवानरयानस्थो यो गच्छेद्दक्षिणां दिशम्।
स्वप्ने पश्यति तस्यापि मृत्युरेव न संशयः॥६७॥

जो मनुष्य स्वप्नमें ऋक्ष वा बन्दरपर चढ़कर अपने
आपको दक्षिण दिशाको जाता देखे तो निःसन्देह
उसकी मृत्यु होगी॥ ६७ ॥

गायन्ती वा हसन्ती च रक्तकृष्णाम्बरा यदा।
दक्षिणाशां नयेन्नारी स्वप्ने जीवंति नैव ते॥६८॥

जिन मनुष्योंको स्वप्नमें लाल वा काले वस्त्र धारणकर

गान वा हास्य करती हुई स्त्री दक्षिण दिशामें
जाय तो वे कभी जीवित नहीं रह सकते ॥ ६८

नग्नं क्षपणकं स्वप्ने वेश्मायान्तं महाबलम् ।
एकं वावीक्ष्यमाणस्तुविद्यान्मृत्युमुपस्थितम्॥६

जो स्वप्नमें नंगे महाबलयुक्त क्षपणकको देखे
उसकी मृत्यु निकटही जानो ॥ ६९ ॥

आमस्तकं स्वयं यस्तु निमग्नं पङ्कसागरे ।
स्वप्ने पश्येत्तदा यस्तु स सद्यो म्रियते नरः७

जो मनुष्य शिरसहित सम्पूर्ण शरीरको कीचड़
डूबाहुआ देखे तो वह शीघ्रही मरजाता है ॥ ७० ॥

केशाङ्गारचिताभस्मभुजगां निर्जलां नदीम् ।
दृष्ट्वा स्वप्ने दशाहे वा मृत्युरेकादशे दिने ॥७१

जो मनुष्य स्वप्नावस्थामें बाल, अंगार, चिताभस्म
और टेढ़ी चलनेवाली नदीको निर्जल देखे तो दसदिनमें
अथवा ग्यारह दिनमें उसकी मृत्यु होगी ॥ ७१ ॥

सूर्य्योदये शिवा यस्य क्रोशन्ती याति सम्मुखम्।
परितो गृध्रशब्दः स्यात्सद्यो मृत्युं स गच्छति७२

सूर्योदयके समय जिसके सम्मुख वा पीछे अथवा चारों दिशामें गीदड़ शब्द करैं वह शीघ्र मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ७२ ॥

यस्य वै भुक्तमात्रस्य हृदयं बाध्यते क्षुधा ।
जायते दन्तहर्षश्च स गतायुर्न संशयः ॥ ७३ ॥

भोजन भी जिसके हृदयकी क्षुधाको पीड़ा दे और दंतपंक्ति खिलै उसकी मृत्यु निश्चय जानो ॥ ७३ ॥

शक्रायुधं चार्द्धरात्रे चन्द्रस्य ग्रहणं तथा ।
दृष्ट्वा मन्येत संक्षीणमात्मजीवितमात्मवित्॥७४॥

जो मनुष्य आधी रातमें इन्द्रधनुष और चंद्रग्रहण देखे तो उसका जीवन क्षयको प्राप्त होता है ॥ ७४ ॥

नासिका वक्रतामेति कर्णयोर्नमनोन्नतिम् ।
नेत्रे बाष्पं स्रवेद्यस्य स गच्छेद्यममन्दिरम्॥७५॥

जिसकी नाक टेढ़ी और कर्ण ऊँचा वा नीचा हो और नेत्रोंमेंसे आंसु गिरै वह यमभवनमें जाता है॥७५॥

आरक्ततामेति मुखं जिह्वा च सामिषं सदा ।
तदा प्राज्ञो विजानीयान्मृत्युमासन्नमात्मनः॥७६॥

जिसका मुख सदा लाल रहै और जीभ मांसयुक्त दीखै तो दो महीनेमें उसकी मृत्यु होती है ॥ ७६ ॥

पिधाय कर्णौ निर्घोषं न शृणोत्यात्मसम्भवम् ।
न नश्येच्चक्षुषो ज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति७७

जो मनुष्य कान ढककर अपने शब्दको न सुन सके और जिसके नेत्रकी ज्योति स्पष्ट हो वह भी नहीं बचता ॥ ७७ ॥

एतानि कालचिह्नानि सन्धीनि च बहूनि च ।
ज्ञात्वाभ्यसेन्नरो योगमथवा काशिकां व्रजेत्७८

लिखेहुए मृत्युचिह्न और अनेकानेक संधि सम्पूर्ण जानकर मनुष्यको योगाभ्यास अथवा काशी गमन करना चाहिये ॥ ७८ ॥

कालस्य वंचनोपायमिमं सत्यं वदाम्यहम्।
विना मृत्युं जयेन्नैव काशीनाथस्य पूजनात्।
तथैव रोगनाशस्तु विना चौषधिभक्षणात् ॥७९॥

हे देवि! मैंने कालकी वंचना करनेके समय यथार्थ उपाय कहा था यथा—एक मृत्युञ्जयमात्र काशीनाथकी पूजा करनेसे औषधीके विनाही भक्षण किये रोग नष्ट होजाते हैं ॥ ७९ ॥

अथ औषधोत्पाटनम्।

अक्रूराहं जयापूर्णाविष्टिहीनतिथौ तथा।
मृदुलघुचरर्क्षञ्च औषधोत्पाटने शुभम् ॥८०॥

मंगलआदि क्रूरवारोंको त्याग अन्यवारोंमें, तीज, पंचमी, अष्टमी, तेरस और पंचमी, दशमी, पूर्णिमाके दिन भद्राआदि अरिष्टोंको बचाय मृदु[1] लघु[2] और चर[3] नक्षत्रोंमें औषधि उखाडनेसे शुभफल होता है ॥ ८० ॥

---

१ मृगशिर, चित्रा, अनुराधा और रेवती नक्षत्रको मृदु कहते हैं।
२ अश्विनी, पुष्य, हस्त और अभिजित्को लघु कहते हैं।
३ पुनर्वसु, स्वाति, श्रवण, घनिष्ठा और शतभिषाको चर कहते हैं॥

अथ ऋतुभेदः ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि भैषज्यं ऋतुभेदतः ।
दिवा रात्रौ तथा योज्यं वसन्तादौ यथाक्रमम् ८१

अब ऋतुभेदसे भैषज्य कहते हैं, दिनरातके बीचमें यथाक्रमसे वसन्तादि ऋतु धरने चाहिये ॥ ८१ ॥

वसंतश्चैव पूर्वाह्णे ग्रीष्मो मध्याह्न उच्यते ।
वर्षा ज्ञेयाऽपराह्णे हि प्रदोषे तु शरत्स्मृता॥८२॥

पूर्वाह्णमें वसन्त, मध्याह्नमें ग्रीष्म, अपराह्णमें वर्षा, प्रदोषमें शरत् ॥ ८२ ॥

मध्यरात्रौ च हेमन्तः शिशिरः शेषरात्रिके ।
दशदण्डक्रमाद्देवि जानीयादृतुभेदकम् ॥८३ ॥

मध्यरातमें हेमंत और शेषरातमें शिशिर काल धरना चाहिये,हे देवि! उक्त छः ऋतु दस २ घडीमें जानो ॥८३॥

वशीकरणकर्मादि वसंते चैव कारयेत् ।
ग्रीष्मे विद्वेषणं कुर्यात्प्रावृषि द्रावणं तथा ॥८४॥

वसन्तमें वशीकरणादिकार्य, ग्रीष्ममें विद्वेषणकार्य, प्रावृट्कालमें विद्रावण ॥ ८४ ॥

शारदे शान्तिकं चैव हेमन्ते पौष्टिकं तथा।
शिशिरे मारणं कुर्याद्दतुकालविभेदतः ॥ ८५ ॥

शरत्में शान्तिकर्म, हेमन्तमें पुष्टिकर्म और शिशिरमें मारणकर्मका अनुष्ठान करै ॥ ८५ ॥

ऋतवः कथिता ह्येते सर्व्व एव क्रमेण तु।
वश्यादिकर्म्मसिद्धिश्च प्रयत्नेनापि सर्व्वतः॥८६॥

इसप्रकार यथाक्रमसे सम्पूर्ण ऋतु और ऋतुकालभेदमें वशीकरणादिकार्यसिद्धि और प्रयत्नके साथ सब प्रकारसे साधन करै ॥ ८६ ॥

तर्ज्जन्यादिसमारूढं जपं जप्याद्यथाक्रमम् ॥८७॥

इन सम्पूर्ण कार्यमें तर्जनी आदि अंगुलीसे क्रमानुसार जप करै ॥ ८७ ॥

अथ चित्रकल्पः ।

रक्तचित्रं पलं चैव विडङ्गगुडकं तथा ।
एतेषां समतांकुर्यात्पिष्ट्वा च वटिकां चरेत् ८८॥
भृंगराजरसेनैव मर्दयेत्तु दिनत्रयम् ।
एकैकदिवसे तस्य एकैकां भक्षयेत्ततः ॥८९॥

लाल चीता, विडंग और गुडूची प्रत्येक आठ आठ तोला लेकर पीस भांगरेके रसमें तीन दिन भावना दे फिर गोली बनावे, और उक्तवटी प्रतिदिन एक २ भक्षण करे ॥ ८८ ॥ ९९ ॥

एला च करकं चैव कलां नागेश्वरं तथा ।
मासैके व्याधिनाशश्च श्लीपदश्च चतुर्थकम् ।
तथैव गलगण्डश्च कोष्ठवृद्धिश्च नाशयेत् ॥९०॥

इलायची, नागकेशर, पीपल और दाडिमी यह समस्त द्रव्य समभाग लेकर पीसकै गोली बनावै, इस औषधसे

श्लीपद चातुर्थिक ज्वर गलगंड और कोषवृद्धि रोग एक महीनेमें आरोग्य होता है ॥ ९० ॥

बलपुष्टिप्रदं देवि षण्मासे कुञ्जरोपमः ।
द्विमासे कांतिवृद्धिश्च कुष्ठं हन्ति त्रिमासके ९१॥

उक्त औषध छः महीने सेवन करनेसे हाथीकी समान बलवान, दो मास सेवन करनेसे कान्ति वृद्धि और तीन महीनेमें कोढ नष्ट होता है ॥ ९१ ॥

बृहस्पतिसमो विद्वान्सप्तमासे भविष्यति ।
मम तुल्यो भवेद्योगी संवत्सरं च भक्षणात्॥९२॥

सात महीने सेवन करनेसे बृहस्पतिकी समान विद्वान् होता है और एक वर्ष सेवन करनेसे मेरी समान योगी होजाता है ॥ ९२ ॥

अथ मण्डूकपर्णीकल्पः ।

मण्डूकपर्णीं पुष्याकें चोत्पाट्य च समूलिकाम् ।
प्रक्षाल्य शोषयित्वा च सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ९३

रविवारके दिन पुष्य नक्षत्रमें मजीठको जड समेत उखाडे, और भली भाँति धोकर सुखाय महीन चूर्ण करे ॥ ९३ ॥

घृतभाण्डे ततः स्थाप्य यावत्पुष्यार्कवासरम् ।
बिडालपदकैस्तुल्यं कांजिकैः सह यःपिबेत्॥९४॥

और घीके बर्तनमें रविवारके दिन पुष्य नक्षत्रके आने तक रक्खै फिर दो तोले काँजीके साथ भक्षण करै ॥ ९४ ॥

आप्लाव्य सह दुग्धेन मासैके सर्व्वरोगहा ।
द्विमासभक्षणाद्देवि पलितं वर्ज्जयेत्तथा ।
योगसिद्धिं यौवनं च चिरमायुर्लभेन्नरः ॥ ९५ ॥

दूधके साथ सेवन करे तो सम्पूर्ण रोग एक महीने के मध्यमें नष्ट होजाते हैं। हे देवि! दो मास सेवन करनेसे पलित (बालोंका सफेद होना) नष्ट होता है। योगसिद्धि और यौवन चिरस्थायी होता है ॥ ९५ ॥

अथ पुनर्नवाकल्पः ।

पौषार्कदिवसे सौम्ये प्रातः श्वेतपुनर्नवाम् ।
समूलपत्रां संगृह्य सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥ ९६ ॥

पौष मासके शुक्ल पक्षके रविवारको प्रातःकालमें जड और पत्तोंके साथ श्वेत विषखपरा उखाडै और सुखाकर महीन चूर्ण करै ॥ ९६ ॥

मर्दयित्वा ततः पश्चात् घृतेन मधुना सह ।
यत्नेन स्थापयेद्भाण्डे यथा रक्षा भवेत्तथा ॥९७॥

फिर घी और शहदके साथ मलकर यत्नपूर्वक घीके बर्तनमें रक्खे ॥ ९७ ॥

ततो मासान्तरे देवि चम्पककुसुमप्रभम् ।
वसन्तसमये तस्य शुचिर्भूत्वा समाहितः॥९८॥

हे देवि ! एकमहीनेके उपरान्त उक्त औषध चम्पेके फूलके समान होजायगी, फिर वसन्तकालमें पवित्र होकर और यत्नपूर्वक ॥ ९८ ॥

मासमेकंभवेत् सत्यं मलमूत्रं सुगन्धिकम्।
अलिपक्ष्मोपमाः केशा गौरदेहो भवेत्तदा ॥९९॥

एकमहीने सेवन करै तो मल मूत्र सुगंधित हो, भौंरेके पंखोंके समान बाल काले हों, शरीर गोरा हो ॥९९॥

बृहस्पतिसमो वाग्मी जीवेत्पञ्चशताब्दिकम्।
नास्ति चैतत्समः कल्पः कथितश्च पुनर्नवाम्॥
स्थिरोयुवाभवेद्देही कल्पस्यास्यचसेवनात् १००

बृहस्पतिके समान विद्वान् हो, और ५०० वर्षकी परमायु बढ़ै। हे देवि! इस पुनर्नवाकल्पके समान कल्प दूसरा और पृथ्वीमें नहीं है। इस औषधके सेवन करनेसे देहमें यौवन स्थिरीभूत होता है॥ १००॥

अथ निर्गुण्डीकल्पः।

ईश्वर उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि निर्गुण्डीकल्पमुत्तमम्।
धनधान्यकरी देवि आयुरारोग्यवर्द्धिनी ॥१०१॥

शान्तिपुष्टिकरी नित्यं साक्षाद्देवीस्वरूपिणी।
निर्गुण्डीतिसमाख्यातासर्व्वलोकसुखप्रदा १०२

शिवजी बोले हे देवि ! इसके उपरान्त निर्गुण्डी-कल्प सुनो, इस उत्तम कल्पके श्रवण और भक्षण करनेसे धन धान्य, आयुवृद्धि, शान्ति और देहपुष्टि होती है, यह सब मनुष्यको सुखदायिनी साक्षात् देवी-रूपिणी है ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

तस्मादहं प्रवक्ष्यामि प्रयोगं शृणु सुन्दरि।
निर्गुण्डीमूलमुद्धृत्य शोभनेन दिनेन तु॥१०३॥

इस कारण हे सुन्दरि ! इसके प्रयोगकी विधि वर्णन करताहूं श्रवण करो, शुभदिनमें निर्गुण्डीकी जड उखाडे ॥ १०३ ॥

अष्टादशपलं चूर्णं पलद्वादशसर्पिषम्।
मधुषोडशपलं चैव मिश्रीकृत्य विधानतः १०४
एभिस्तु स्निग्धभाण्डे च मासमेकन्तु सर्व्वतः।
स्थापयेद्धान्यराशौ च मासादूर्ध्वंसमुद्धरेत् १०५

और सुखाकर उसका महीन चूर्ण अठारह पल (१४४ तोला) घी १२ पल (९६ तोला) शहद १६ पल (१२८ तोला) एकत्र मिलाकर घीके वर्तनमें धान्यके ढेरके मध्यमें एक महीने तक यत्न पूर्वक रक्खै ॥ १०४ ॥ १०५ ॥

समभ्यर्च्य गुरुं देवं पूजयेच्च विधानतः ।
ब्राह्मणीश्च कुमारीश्च भोजयेच्च यथाविधि १०६॥

फिर निकाले और गुरुदेवकी विधिसे पूजाकर ब्राह्मणी और कन्याओंको भोजन करावै ॥ १०६ ॥

तासामादाय चादेशं शुचिर्भूत्वा शुभे दिने ।
बिडालपदमानन्तुभक्षयेच्च विधानतः ॥१०७॥

फिर उनकी आज्ञासे पवित्र होकर शुभदिनमें दो तोला परिमाण सेवन करै ॥ १०७ ॥

अहन्यहनि भोक्तव्यमिदं भवति लक्षणम् ।
स्कन्धनेत्रे स्वगात्रञ्च भवेद्ललितमेव च ॥१०८॥

उसके प्रतिदिन भक्षण करनेसे यह सम्पूर्ण लक्षण उपस्थित होते हैं। नेत्र, स्कंध; अंस और शरीर बलवान् हो ॥ १०८ ॥

वर्ज्जयेद्वलीपलितं दीर्घजीवी भवेद्ध्रुवम्।
अक्षय्यरेतो भवति शतस्त्रीगमने क्षमः ॥१०९॥

पलित देहमें स्थान न पावै, आयु दीर्घ हो, वीर्य अक्षय हो, सौ स्त्रियोंमें गमन करनेकी शक्ति उत्पन्न हो ॥ १०९ ॥

प्रकामं भोजनं तस्य ततस्तापैर्न बाध्यते।
आहारं मैथुनं निद्रां स्वेच्छया च करोत्यसौ ॥
विकारो मनसः सम्यग्वर्द्धते दृश्यते नरः॥११०॥

दूना भोजन करनेपर भी पीड़ा न हो, अपनी इच्छाके अनुसार आहार निद्रा मैथुन संपूर्णही कर सकता है यह सब चिह्न मनुष्यको दृष्टि आते हैं ॥ ११० ॥

प्रस्थं निर्गुण्डिचूर्णस्य गोमूत्रेण समं पिबेत् ॥
दशरात्रप्रयोगेण कुष्ठमष्टप्रकारकम् ॥ १११ ॥

नाशयेच्च सदा देवि वायुर्मेघमिवाम्बरे ॥११२॥

निर्गुंडीचूर्ण १ सेर १ सेर गोमूत्रके संग पकाकर पीवे यह औषधि दसरात्रि प्रयोग करनेसे आठों प्रकारका कोढ नष्ट होता है, जैसे आकाशमें मेघ पवनसे नष्ट होजाते हैं ॥ १११ ॥ ११२ ॥

निर्गुण्डीश्वेतच्चूर्णमजामूत्रेण यः पिबेत् ।
नखकेशास्तथा दन्ताः सप्ताहेन पतंति वै११३

जो मनुष्य श्वेतानिर्गुंडी चूर्ण बकरेके मूत्रके साथ सेवन करै तो एक सप्ताहके मध्यमें उसके नखून बाल और दांत गिर पड़ें ॥११३॥

द्विसप्ताहप्रयोगेण योगसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
त्रिसप्ताहप्रयोगेण चेदं भवति लक्षणम्॥११४॥

उक्त औषधि दो सप्ताह सेवन करै तो निश्चय योग-सिद्धि हो, और जो इस औषधिको तीन सप्ताह भक्षण करै तौ उसके लक्षण यह हैं ॥ ११४ ॥

न चाग्नौ दह्यते देवि न जले म्रियतेऽपि च।
तस्य देहश्च लोहेन काञ्चनेन न भिद्यते ॥११५॥

हे देवि ! उसकी देह अग्निमें न जले, और न वह जलमें डूबनेसे मरे, उसके देहमें लोहा वा सुवर्ण नहीं विंधै ॥ ११५ ॥

चतुःसप्ताहयोगेन भूमिं त्यक्त्वा नभो व्रजेत् ११६

चार सप्ताह सेवन करनेसे भूमि त्यागकर आकाश गमनमें समर्थ हो सकता है ॥ ११६ ॥

निर्गुण्डीचूर्णमादाय घृतेन सह भक्षयेत् ॥
कृशस्तु दुर्बलो वापि बलवीर्य्ययुतो भवेत् ११७

निर्गुण्डीचूर्ण घीके साथ भक्षण करनेसे कृश और दुर्बल मनुष्य भी निश्चय बलवीर्ययुक्त हो ॥ ११७ ॥

निर्गुण्डीचूर्णमादाय पिबेदुष्णेन वारिणा।
सप्तरात्रप्रयोगेण किन्नरैः सह गीयते ॥ ११८ ॥

यदि निर्गुण्डीचूर्ण गरमजलके साथ सेवन करै तो सात रातके मध्यमें किन्नरके साथ गान करनेमें समर्थ होता है ॥ ११८ ॥

निर्गुण्डीमूलमुद्धृत्य गृहे च धारयेद्बुधः ।
नश्यन्तिसर्व्वविघ्नानिगृहे नागाश्च सर्व्वशः ११९

निर्गुण्डीकी जड़ उखाड़कर घरमें रखनेसे संपूर्ण विघ्न दूर होते हैं और घरमें सर्पभय नहीं होता ॥ ११९ ॥

अथ भक्षणमन्त्रः ।

प्रणवं च ततो मायां कूर्चबीजं फडन्तकम् ।
वह्निजायान्तमन्त्रेण शतधा औषधोपरि ॥
जप्त्वा तु भक्षयेद्देवि कल्पोक्तञ्च फलं भवेत् ।
मन्त्रस्तु ॐ ह्रीं ह्रूँ फट्स्वाहा ॥
तावन्माया द्वयं कूर्चं फडन्तं वह्नि सुन्दरि ॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा औषधं भक्षयेत्सुधीः ॥
मन्त्रः ॐ ह्रींह्रीं ह्रूँ फट्स्वाहा ॥

ॐ नमो नामरूपाय पादपाय कुबेराय ।
वह्निजायान्तमन्त्रेण औषधं भक्षयेत्ततः ॥
औषधं भक्षयेदेवं पुष्टिकौदनभक्षणम् ।

हित्वा क्षाराम्लादिकं च त्रिरात्राभ्यन्तरेततः ॥
औषधं भक्षयेद्देवि यथोक्तं फलमाप्नुयात् ।
यावदौषधं भक्षयेत्तावत् क्षारादिकं तथा ॥
लवणस्नेहशाकादि त्यजेद्वातातपादिकम् १२०॥

"ॐ ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा" इस मंत्रको सौ वार पढ़कर औषधीको अभिमान्त्रित कर भक्षण करे तो कल्पशास्त्रोक्त फल प्राप्त होता है। ऐसे ही हे सुंदरि! "ॐह्रीं ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा" इसको अथवा "ॐ नमो नामरूपाय पादपाय कुबेराय स्वाहा" इस मंत्रको १०८ बार जप करके औषधि भक्षण करै तौ कल्पोक्त फल अवश्य ही प्राप्त होता है। उक्त औषधि सेवन करनेसे पहले तीन रात क्षार अम्लादिको त्यागकर फिर औषधि भक्षणकी व्यवस्था करै और जबतक सेवन करै तबतक क्षार, अम्ल, लवण, चिकनी वस्तु, शाक, हवा और धूप सेवन आदि एक साथ ही त्याग दे॥१२०॥

अथ हस्तिकर्णकल्पः ।

एवमन्यं प्रवक्ष्यामि प्रयोगं शृणु सुन्दरि ।
औषधं दिव्यरूपञ्च स्वाहापूर्वं समुद्धृतम् १२१

हे सुन्दरि ! इसी प्रकार और प्रयोग कहता हूं श्रवण करो, दिव्यरूपी यह औषधि स्वाहा उच्चारण कर उखाड़ै ॥ १२१ ॥

हस्तिकर्ण इति ख्यातो नाम्नासौ सुरपूजितः ।
तस्य भक्षणमात्रेण सर्वरोगात्प्रमुच्यते ॥१२२॥

यह हस्तिकर्ण नामसे विख्यात और देवताओंसे पूजित है, इस औषधिके भक्षणमात्रसे मनुष्य सम्पूर्ण रोगोंसे छूट जाता है ॥ १२२ ॥

मृगेन्द्रं च यथा दृष्ट्वा मृगा यान्ति पराङ्मुखः।
एवं महौषधं प्राप्य व्याधिमात्रं प्रणश्यति १२३

जिस प्रकार सिंहके देखनेसे हिरण आदि भाग जाते हैं इसी प्रकार इस महौषधिके सेवन करनेसे समस्त व्याधि नष्ट होजाती हैं ॥ १२३ ॥

सुतिथौ च सुनक्षत्रे सुदिने च सुपूजिते
सुपुष्पैरक्षतैरर्घ्यं दत्त्वा चैवोत्तरामुखः ॥ १२४ ॥
प्रशस्तमनसा प्राज्ञः समुद्धृत्य तु धारयेत्।१२५।

बुद्धिमान् मनुष्य शुभतिथि और श्रेष्ठ नक्षत्र युक्त शुभ दिनमें श्रेष्ठ फूल और चावलोंसे उक्त वृक्षकी अच्छी तरह पूजा करै और अर्घ्य दे, फिर उत्तरकी ओर मुख करके प्रशस्त मनसे भूमि खोदकर हस्तिकर्ण औषध उखाडे ॥ १२४ ॥ १२५ ॥

ततः पिष्ट्वा सुसंस्कृत्य श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ।
सर्पिर्म्मधुसमायुक्तं घृतभाण्डे निधापयेत्॥१२६॥

फिर सुखाकर सूक्ष्म चूर्ण करै, और घी एवं शहदके साथ मिलाकर घीके बर्तनमें रक्खै ॥ १२६ ॥

एकविंशतिरात्रेण समुद्धृत्य पलार्द्धकम् ।
ब्राह्मणं भोजयित्वा तु स्वस्तीति वाचयेत्ततः ।
दुग्धेन च समायुक्तमहन्यहनि भक्षयेत् ॥१२७॥

२१ दिनके पीछे २ तोला परिमाण उक्त भांडेसे

निकाल कर स्वस्तिवाचन और ब्राह्मण भोज
कराकर प्रतिदिन दूधके साथ भक्षण करै ॥ १२७

पलभक्षणमात्रेण वलीपलितवर्जितः ।
श्रुतिधरो मधुरवाक् श्रीमानेवामरोपमः।१२८
बलवीर्य्यधरो दक्षो नरो नारायणोपमः ।
दिनेन योजनशतं गत्वा च पुनरावजेत्॥१२९॥
जीवेद्वर्षशतं चैव नात्र कार्य्या विचारणा १३०॥

४ तोलेमात्र भक्षण करनेसे मनुष्य वलीपलितहीन, श्रुतिधर, श्रीमान्, देवतुल्य, बलवीर्यधारी, कामकरनेमें चतुर और नारायणके समान होवै। एकदिनमें चारसौ कोस जाकर भी फिर लौट आनेकी सामर्थ्य हो और निःसन्देह सौ वर्षकी उमर हो ॥ १२८–१३० ॥

प्रयोगान्यं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।
कृष्णाधेनोस्तु क्षीरेण संलोडय भक्षयेद्यदि ।

पूर्व्वोक्तं फलमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः १३१
एवं माहिषदुग्धेन संलोड्य मधुना सह।
भुक्त्वा फलं पूर्व्ववच्च लभते त्रयमासके॥१३२॥
दध्ना च भक्षणाद्देवि मासत्रयं प्रयत्नतः।
पूर्ववत्फलमाप्नोति न केशः सिततां व्रजेत् १३३

हे कमलानने! अब दूसरा प्रयोग बताता हूं, सुनो यदि उक्त औषध काली गायके दूधके साथ, भैंसके दूध और शहदके साथ और दहीके साथ जो मनुष्य सेवन करै उसे तीन महीनेमें पूर्वोक्त फल प्राप्त होता है और उसके बाल कभी सफेद नहीं होते॥ १३१–१३३॥

सर्व्वत्र जयमाप्नोति वशीकरणमुत्तमम्।
जीवेद्वर्षशते द्वे च नरो नागबलोपमः॥ १३४॥

और सब जगह जय पाता है, इस औषधसे वशीकरण कार्य भी अच्छी तरह सिद्ध होता है, और दोसौ वर्षकी परमायु होती है, इसके सेवनसे हाथीके समान बलवान् होता है॥ १३४॥

तथा शयनकाले च उदकेन घृतेन वा ।
बिडालपदमानन्तु देहसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥१३५

यदि उक्त औषध सोनेके समय जल अथवा घी
साथ दो तोला सेवन करै तो उसको देहसिद्धि प्रा
होती है ॥ १३५ ॥

यथेच्छया पलशतं भुक्त्वाजरामरो भवेत् १३६

वह अनायास ही दो सेर भोजन कर सकता है,
एवं अजर और अमर होता है ॥ १३६ ॥

कल्पोऽयं परमो गोप्यस्तव स्नेहात्प्रकाशितः ।
यस्य सेवनमात्रेण नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१३७॥

हे देवि ! यह कल्प अत्यन्त गोपनीय है, तुम्हारी
प्रीति और स्नेहके कारण तुम्हारे निकट प्रगट किया
अधिक क्या कहूं ? इस औषधिके सेवनमात्रसे मनुष्य
मोक्षको प्राप्त होता है ॥ १३७ ॥

॥ अथ श्वेतार्ककल्पः ॥

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि श्वेतार्ककल्पमुत्तमम् ।
अस्यमाहात्म्यविस्तारंशृणुष्वकमलानने ॥१३८॥

इसके उपरान्त सर्वोत्तम श्वेतार्ककल्प कहता हूं, हे कमलानने ! उक्त कल्पका विस्तारसे माहात्म्य सुनो ॥ १३८ ॥

श्वेतार्कमूलमुद्धृत्य चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः ।
आदौ सूर्यं नमस्कृत्य विधिवत्पूजयेत्ततः १३९॥

सफेद आककी जड़को उखाड़कर यत्नपूर्वक पीसै, पहले सूर्य देवको प्रणाम करके पश्चात् यथाविधि पूजन करै ॥ १३९ ॥

प्रातरुत्थाय जीर्णान्ते गवां क्षीरेण संपिबेत् ।
भवेच्छ्रुतिधरो धीरो बली पलितवर्जितः ॥१४०॥
कामदेवस्य सदृशः सर्वशास्त्रविशारदः ।
मासमात्रप्रयोगेण जीवेद्वर्षशतं नरः ॥
सर्वरोगविनिर्मुक्तो नरो नागबलोपमः ॥ १४१ ॥

फिर प्रातःकाल उठकर पहले विना भोजनपान वि
गायके दूधके साथ उचित मात्रा सेवन करै, उक्त औष
एकमहीने सेवन करनेसे मनुष्य श्रुतिधर, धीर, बलि
पलितशून्य, कामदेवके समान सुन्दर और सम्पू
शास्त्रोंमें चतुर होकर सौवर्षकी आयु पाकर रोगरहि
और हाथीके समान बलवान् होता है ॥१४०॥१४१

श्वेतार्कमूलकं हस्ते बद्धा देशान्तरं व्रजेत्
भूतप्रेतपिशाचाद्या डाकिन्यो गुह्यकास्तथा
दृष्टिमात्रात्पलायन्ते श्वेतार्कस्य प्रसादतः१४२

यदि कोई पुरुष सफेद आककी जड़को हाथमें बाँध
कर देशान्तरमें जाय तो भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी
गुह्यक उस सफेद आककी जड़के प्रसादसे देखने मात्र
भाग जाते हैं ॥ १४२ ॥

श्वेतार्कं गोरोचनया गोघृतेन च पेषयेत् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत्१४

सफेद आककी जड़ और गोरोचन गायके घीके साथ पीसकर यदि मस्तकपर तिलक धारण करै तो त्रिलोकी उसके वशमें होजाय ॥ १४३ ॥

श्वेतार्कस्य दलेनैव चन्दनं सह पेषयेत्।
एतद्वराङ्गके दत्त्वा किन्नरी भवति ध्रुवम्१४४॥

यदि कोई स्त्री सफेद आकके पत्ते चन्दनके साथ पीसकर वराङ्गदेश(योनि)में लगावै तो निश्चय किन्नरीके समान होजायगी ॥ १४४ ॥

श्वेतार्कमूलकं कट्यां बद्धा वै रमणीं रमेत्।
धारयेत्पतितं शुक्रं स्त्रियश्च वशमानयेत्१४५॥

यदि बुद्धिमान् मनुष्य सफेद आककी जड़ कमरमें बांधकर मैथुन करे तो वीर्य धारण करनेमें समर्थ और उस स्त्रीको वशीभूत कर सकता है ॥ १४५ ॥

श्वेतार्कं पद्मपत्रं च कटौ बद्धा रमेत्स्त्रियम्।
धारयेच्च नरः शुक्रं रमेन्नारीशतं यदि ॥ १४६॥

यदि मनुष्य सफेद आक और कमलका प
कमरमें बांधकर रमणमें आसक्त हो तो सौ स्त्रियोंह
मैथुन करनेपर भी वीर्य पात नहीं होता ॥ १४६

श्वेतार्कमूलमानीय रेतसा स्वेन पेषयेत् ।
तिलकंकारयेद्यस्तु तस्य विश्वं वशं भवेत् १४

यदि सफेद आककी जड अपने वीर्यके साथ पी
कर तिलक धारण करै तो संसार उसके वशमेंहोजाय १४

स्वरसं मधुसंयुक्तं श्वेतार्कतुलया सह ।
यावत्प्रज्वलतेदीपस्तावच्छुक्रं च न क्षरेत् १४८

सफेद आकका रस शहदके साथ मिलावै, उसके
सफेद आककी रुईकी बत्तीमें मिलावै, उससे दीपक
बाला जाय तो जबतक वह दीपक जलैगा तबतक
वीर्यपात न होगा ॥ १४८ ॥

नाभिपद्मदले बद्धा तन्मूलं दक्षिणे करे
धारयेच्च सदा देवि सौभाग्यं परमं भवेत् १४

हे देवि ! जो मनुष्य नाभिकमलमें और दाहिने हाथमें सफेद आककी जड़ धारण करै वह सदा सौभाग्यशाली रहै ॥ १४९ ॥

श्वेतार्ककल्पमाहात्म्यं तव स्नेहात्प्रकाशितम् ।
न वक्तव्यं कामुकाय शठाय न कदाचन।१५०।

मैंने स्नेहके वश होकर यह श्वेतार्ककल्प कहा इसे कामी और दुष्टसे कभी न कहना चाहिये ॥१५०॥

अथ भृङ्गराजकल्पः ।

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि भृङ्गकल्पमनुत्तमम् ।
भृङ्गराजमूलपत्रं चूर्णयित्वा प्रयत्नतः ॥१५१॥
काञ्जिकैः पेषयेत्सम्यक् वटीं कुर्यात्प्रयत्नतः ।
तत्पिबेत्सहयत्नेन मासमेकं गुणो भवेत्१५२॥

हे देवि ! इसके उपरान्त अति उत्तम भृङ्गराजकल्प श्रवण करो । भांगरेकी जड़ और पत्ते यत्नपूर्वक चूर्ण करे

और कांजीके साथ पीसकर गोली बनावै उ
वटी दूधके साथ सेवन करै तो एक महीनेमें इसका गु
होता है ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

भृङ्गराजपत्ररसं कृष्णजीरसमं पिबेत् ।
तैलेन सह संदद्याद् बलीपलितवर्ज्जितः॥१५३

भांगरेके पत्तेका रस और काला जीरा बराब
भक्षण करै और तेलके साथ शरीरमें लेपन करने
वलीपलित (बालोंका गिरना) दूर होता है ॥ १५३

भृङ्गराजरसं चैव गुडूचीरससंयुतम् ।
मासमात्रप्रयोगेण सर्वव्याधिर्विनश्यति १५४

उक्त रस और गिलोयका रस बराबर २ एक मा
सेवन करनेसे सम्पूर्ण रोग नष्ट होते हैं ॥ १५४ ॥

अथ काछलाकल्पः ।

वक्ष्यामि काछलाकल्पं शृणुष्व कमलानने ।
काछलायाः प्रहारेण नाभिपीडा विनश्यति ।
तस्या मूलं करे बद्धा अतीसारो विनश्यति १५५

हे कमलानने ! अब काछलाकल्पको कहता हूं, नो, काछलाके प्रहारसे नाभिकी व्यथा नष्ट होती है और इसकी जड़ हाथमें बांधनेसे अतीसार रोग नष्ट ोता है ॥ १५५ ॥

अथ अम्लालोनीकल्पः ।

अथाम्लालोनीकल्पञ्च कथयामि वरानने ।
अम्लालोनीरसं दत्त्वा चक्षुःशूलं विनाशयेत् ॥
अतिसारं नाभिशूलं शिरःशूलं तथैव च१५६॥

हे वरानने ! अब अम्लालौनीकल्पको कहता हूं, म्लालौनीके रससे नेत्रशूल, अतिसार, नाभिशूल, स्तकशूल नष्ट होता है ॥ १५६ ॥

अम्लालोनी साचिमूलं मरिचं कुष्ठमेव च ॥
पेषयित्वा पिबेद्यस्तु वसन्तस्तस्य नश्यति१५७

अम्लालौनी, साचिमूल, मरिच और कूट बराबर २ एक जगह पीसकर सेवन करनेसे वसन्तरोग ष्ट होता है ॥ १५७ ॥

अथ शाल्मलीकल्पः।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि शाल्मलीकल्पमुत्तमम्
श्वेता पीता तथा रक्ता कृष्णाचेतिचतुर्विधा १५

हे देवि! अब उत्तम शाल्मलीकल्पको कहता सुनो—शाल्मली वृक्ष चार प्रकारका होता है, सफे पीली, लाल और काली॥ १५८॥

ब्रह्माणी श्वेतवर्णा च पीतवर्णा च बाहुजा।
रक्ता चैव भवेद्वैश्या कृष्णा शूद्रा प्रकीर्त्तिता १५

तिसमें श्वेत ब्राह्मणी, पीली क्षत्रिया, रक्तवर्णा वैश्य और कृष्णवर्णा शूद्रा जानो॥ १५९॥

चतुर्वर्णमयी देवी सर्व्वभूतानुकम्पिनी॥१६०

यह चतुर्वर्णमयी शाल्मली देवी सब प्राणियोंप दया करनेवाली है॥ १६०॥

श्वेता पीता तथा कृष्णा नहि सर्वत्र लभ्यते
रक्तैव कथयिष्यामि या च सर्वत्र लभ्यते।१६१

सफेद, पीली और काली सब जगह नहीं मिल सकती हैं परन्तु लाल शाल्मली सब जगह मिलती है, इस कारण उसका ही विषय वर्णन करता हूं ॥ १६१ ॥

तस्याः पुष्परसं लब्ध्वा वह्नियोगेन साधितम् ॥
मुहूर्त्तं च कर्त्तव्यं ज्ञात्वा चन्द्रबलाबलम् ।
पलद्वयं पिबेत्प्राज्ञ एकचित्तः समाहितः ॥१६२॥

शुभ मुहूर्तमें चंद्रमाका बलाबल विचार लाल शाल्मलीके फूल ८ तोले एकसेर जलमें सिद्ध करके पावभर शेष रहने पर बुद्धिमान् मनुष्य उसको स्थिर चित्तसे यदि पान करै ॥ १६२ ॥

रजनीप्रहरैकेन उन्मादो जायते ध्रुवम् ।
अष्टौ स्त्रियः कामयते स्वेच्छया परिबृंहितः ॥
एकद्वित्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टस्त्रियो रमेत् ॥१६३॥

तो एक प्रहर रातिके मध्य उत्तमा रतिशक्ति प्रकट हो और एक २ करके आठ स्त्रियोंसे मैथुन करनेमें समर्थ हो॥ १६३ ॥

प्रथमे द्विपले देवि चत्वारि च द्वितीयके ॥
तृतीये षट् पलान्येव पलान्यष्टौ चतुर्थके १६४

हे देवि ! पहले पहरमें ४तोले, दूसरेमें आठ तो
तीसरेमें बारह तोले और चौथे पहरमें सोलह तो
सेवन करै ॥ १६४ ॥

प्रतियामं पिबेत्क्षीरं रमेच्च योषितं तथा ॥१६५

प्रति पहरमें दूध पीकर स्त्रियोंके साथ रम
करै ॥ १६५ ॥

अनेनैव विधानेन नरः सिद्धिमवाप्नुयात् ।
चतुर्वर्षशतं देवि नरो जीवेन्न संशयः ॥ १६६

इस विधिसे मनुष्य सरलतासे सिद्धि प्राप्त कर सक
है और चारसौ वर्ष जीता है ॥ १६६ ॥

नरो नागबलोपेतः कामदेवसमो भवेत् ।
नारीणां सम्मतो नित्यं सुभगः प्रियदर्शनः ॥
शीघ्रगामी भवेच्चैव वलीपलितवर्जितः ॥ १६७

हाथीके बलके समान बलवान्, कामदेवके समान सुन्दर, नित्य स्त्रियोंको प्यारा, दर्शनीय, शीघ्र चलनेवाला और वलीपलितहीन होता है ॥ १६७ ॥

अथ अभयाकल्पः ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि अभयाकल्पमुत्तमम् ।
भक्षयेदृतुभेदेन देवतुल्यो भवेन्नरः ॥ १६८ ॥

इसके उपरान्त श्रेष्ठ अभयाकल्पको कहताहूं, ऋतुभेदसे हरड़ खानेवाला मनुष्य देवतुल्य हो सकता है ॥१६८॥

शरदत्काले सितायुक्ता हेमन्ते नागरेण च ।
शिशिरे पिप्पलीयुक्ता वसन्ते मधुना सह १६९॥
ग्रीष्मे च गुडसंयुक्ता वर्षासु लवणेन च ।
अनेनैव विधानेन भक्षयेद्यो हरीतकीम् ॥ १७० ॥
तस्य बुद्धिर्बलं वीर्यमारोग्यं स्थिरयौवनम् ।
अग्निर्दहति काष्ठानि शरीरस्य हरीतकी ॥१७१

शरत्कालमें चीनीके साथ, हेमन्तमें सोंठके साथ, शिशिरमें पीपलके साथ, वसन्तमें शहदके साथ, ग्रीष्ममें

गुड़के साथ और वर्षामें नोनके साथ हरड़का सेवन करने
बल वीर्य बढ़ता है, रोग नहीं होता और स्थिरयौव
होता है और जठराग्नि काठोंको भी पचा सकती है, तै
ही शरीरके रोगोंको हरती है ॥१६९–१७१ ॥

कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी ।
मातेव तस्माद्भवति हितकारी हरीतकी ॥१७२

कदाचित् माता भी क्रुद्ध होजाय परन्तु पेटमें स्थि
होकर हरड़ कभी कुपित नहीं होती, इसलिये माताके समा
हितकारी है ॥ १७२ ॥

अथ औषधभक्षणे नक्षत्रनियमः ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि रोगिणां हितलब्धये ।
यानि ऋक्षाणि शस्तानि नृणामौषधभक्षणे १७

अब औषधि सेवन करनेके नक्षत्र कहता हूं, जिन
मनुष्योंको औषधि खानी चाहिये ॥ १७३ ॥

मृगो हस्तेन्द्रमूलं वै विशाखाश्चानुराधका ।
धनिष्ठा शतभिषा चैव भैषज्यभक्षणे शुभा १७

मृगशिरा, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, यह सम्पूर्ण नक्षत्र औषधभक्षणमें श्रेष्ठ हैं ॥ १७४ ॥

देव्युवाच ।

इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णा च तृतीयका ।
योगिनां कार्यसिद्ध्यर्थे नाडीत्रयं प्रशस्यते १७५

देवी बोली हे देव ! योगियोंके कार्यसिद्धिके निमित्त इडा, पिंगला और सुषुम्णा नामक यह तीन नाडी हैं ॥ १७५ ॥

केनोपायेन देवेश प्रकाश्यन्ते च नाडयः॥१७६॥

किस उपायसे उन नाडियोंका परिज्ञान होता है । यह कहकर मेरे कौतुकको शांत कीजिये ॥ १७६ ॥

ईश्वर उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
इडा मेरौ स्थिता नित्यं शीतला चन्द्ररूपिणी ॥
घृतप्रकाशितासास्याद्घृतं तस्माच्च संपिबेत् १७७

ईश्वर बोले--हे देवि ! मेरुदंडके बहिर्भागमें चन्द्र रूपिणी शीतल इडा नाडीका स्थान है, उक्त नाड़ी घीसेवन करनेसे प्रकाशित होती है यानी जानी जाती है अतएव घृत पान करना आवश्यक है ॥ १७७ ॥

दक्षिणे पिङ्गला नाडी दिवाकरसमप्रभा ।
उग्रवीर्य्या च सा नाडीमधुना सा प्रकाश्यते १७८

मेरुदंडके दाहिने भागमें दिवाकररूपी उग्रवीर्य पिंगला नाड़ीका स्थान है, वह शहद सेवन करनेसे प्रकाशित होती है ॥ १७८ ॥

मेरोर्मध्ये सुषुम्णा च केवलानन्दरूपिणी ।
मिष्टदाडिमरसेनैव सुषुम्णा च प्रकाशिता ।
काश्मीरोद्भवदाडिममिष्टदाडिममुच्यते ॥१७९॥

मेरुके मध्यभागमें केवल आनंदरूपिणी सुषुम्ना नाड़ी विराजती है, उक्तनाडी काश्मीर देशकी मीठी दारमी खानेसे प्रकाशित होती है ॥ १७९ ॥

अथ ज्वरचिकित्सा।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चिकित्सां ज्वरसम्भवे।
वातिकं पैत्तिकं चैव श्लैष्मिकं वाथ द्वंद्वजे १८०॥
भृंगराजस्य मूलञ्च च्छित्त्वा तत्सप्तखण्डकम्।
आर्द्रकैर्भक्षणेनैव महाज्वरविनाशनम् ॥१८१॥

हे देवि! अब ज्वरकी चिकित्सा कहताहूं—वातिक, पैत्तिक, सान्निपातिक, द्वंद्वज, ज्वरमें ७ खंड भांगरेकी जड़ छेदन करके अदरखके साथ भक्षण करनेसे निश्चय ज्वर नष्ट होता है॥ १८०॥ १८१॥

नागरं गुडुची चैव धान्याकं रक्तचन्दनम्।
उशीरं चैव प्रत्येकं क्वाथ्यपञ्चसमन्वितम्।१८२।
चतुर्भागैकशेषन्तु तद्वारिस्थितशेषकम्।
कम्पनं वेदनां तीव्रं ज्वरं नाशयति वातिकम्१८३

सोंठ, गिलोय, धनियां, लालचंदन, खस प्रत्येक वस्तु १२। १२ रत्ती लेकर आधेसेर जलमें पकावै,

जब आधापाव रहजाय तिसके साथ इस औषधिके सेवन करनेसे कंप और तीव्र वेदनायुक्त वातिक ज्वर नष्ट होता है ॥ १८२ ॥ १८३ ॥

अपामार्गजटा कट्यां सप्तलोहिततन्तुभिः।
बद्धा तूर्णं रवेर्वारे ज्वरं हन्ति तृतीयकम् १८४॥

रविवारके दिन चिर्चिटेकी जड़ सात लालडोरोंसे बांध कर कमरमें बांधनेसे तृतीयकज्वर नष्ट होता है॥१८४॥

गुग्गुलूलूकपुच्छाभ्यां धूपितो मानुषो भवेत्।
चातुर्थिकं ज्वरं हन्ति कृष्णवस्त्रविगुण्ठितः १८५

रोगीको कालेवस्त्रसे ढककर गूगुल और उल्लूकी पूंछकी धूप देनेसे चातुर्थिक ज्वर नष्ट होता है॥१८५॥

जम्बूफलं हरिद्रां च सर्पस्यैव तु कञ्चुकम्।
सर्व्वज्वराणां धूपोऽयं हर्त्तारान्यन्धकस्य च १८६

जामन, हलदी, सांपकी कैंचली इन सबको इकट्ठा कर धूप देनेसे सब प्रकारका ज्वर रतौंधा नष्ट होता है ॥ १८६ ॥

अथ ज्वरनाशनमन्त्रः ।

अथ मन्त्रप्रकारेण ज्वरशान्ति शृणुष्व मे ।
(ॐनमोभगवतेछिन्धि छिन्धि अमुकस्य शिरः प्रज्वलितपशुपाशे पुरुषाय फट्) मन्त्रेणानेन देवेशि भूमांगच्छेदनं चरेत्।ततो महाज्वरो देवि विनाशं याति वै प्रिये ॥ १८७ ॥

हे देवि ! अब ज्वरनाशन मंत्र सुनो"ॐनमो भगवते छिंधि २ अमुकस्य शिरःप्रज्वलितपशुपाशे पुरुषाय फट्" इस मंत्रको पढ़कर पृथ्वीमें लिखे हुए अंगको छेदन करनेसे महाज्वर नष्ट होता है ॥ १८७ ॥

देवकाष्ठं गुडूची च धान्याकं रक्तचन्दनम् ।
कम्पनं वेदनां तीव्रं ज्वरं नाशयति वातिकम् १८८

देवदारु, गिलोय, धनियां, लालचंदन प्रत्येकको आधा २ तोला लेनेसे दो तोला होता है,तिसको आधासेर

जलमें पकावै, जब आधपाव रहजाय तब सेवन करनेसे कम्प वेदना और तीव्रज्वर नष्ट होता है॥ १८८॥

करे बद्धन्तु निर्गुण्ड्या मूलं ज्वरहरं ततः ।
हस्ते रक्तपलाशस्य अपामार्गस्य वा प्रिये ॥
मूलं सर्व्वज्वरहरं भूतप्रेतादिसम्भवम् ॥ १८९॥

निर्गुण्डीकी जड़ हाथमें बांधनेसे भी ज्वर नष्ट होता है लालपलाश वा चिर्चिटेकी जड़ हाथमें धारण करनेसे भूत प्रेतादिसे उत्पन्न हुआ सब प्रकारका ज्वर नष्ट होता है ॥ १८९ ॥

सहदेवा धृता कर्णे लाङ्गलीमूलकं गले ।
बृहस्पतिमूलकं वापि मूलं वा वाडियालकम् ॥
बद्धं शिरसि सूत्रेण महाज्वरविनाशनम् ॥१९०॥

खिरैंटीकी जड़ कानमें, नारियलकी जड़ गलेमें कटेहरी वा खरेंटीकी जड़ डोरेसे मस्तकमें धारण करनेसे महाज्वर नष्ट होता है ॥ १९० ॥

रविवारे समुत्पाट्य चापामार्गस्य मूलकम् ।
सप्तसूत्रैश्च हि करे बद्धं ज्वरहरं ततः ॥ १९१ ॥

रविवारके दिन चिर्चिटेकी जड उखाडकर सात डोरोंसे हाथमें बांधनेसे ज्वर नष्ट होताहै ॥ १९१ ॥

समभागं द्रवं चैव आर्द्रकं वासकं मधु ।
ऐकाहिकं ज्वरं हन्ति भक्षयित्वा दिनत्रयम् १९२

अदरख और विसौंटेका रस बराबर लेकर शहदके साथ तीन दिन सेवन करनेसे एकतरादि ज्वर नष्ट होताहै ॥ १९२ ॥

अथो निमंत्रेयेद्देवीं शुष्कलांगलमृत्तिकाम् ।
तिलकं तत्प्रभाते च शय्यायां कारयेन्नरः ॥
ऐकाहिकं ज्वरं तीव्रं नाशयेद्रविवासरे ॥ १९३ ॥

शनिवारके दिन सूखी तालवृक्षकी मट्टी लावै दूसरे दिन प्रातःकाल संध्यामें स्थित हो उक्त मट्टीका तिलक धारण करनेसे तीव्र ऐकाहिक ज्वर नष्ट होताहै ॥ १९३ ॥

ॐनमो भगवते छिन्धिछिन्धि अमुकस्य शिरः प्रज्वलपरायणपुरुषाय फट् ॥ या वै सरस्वतीतीरे अपुत्रा तापसी मृता । तस्यै तिलोदकं दद्यान्मुक्तश्चैकाहिकज्वरात् ॥ इति मूषिकगर्त्ते वीरणपत्रे कञ्जीपत्रजपापुष्पैस्तिलजलेन तर्पणम् ॥ १९४ ॥

ॐ नमो भगवते छिन्धि छिन्धि अमुकस्य शिरःप्रज्वलपरायण पुरुषाय फट्-"या वै सरस्वतीतीरेअपुत्रा तापसी मृता। तस्यै तिलोदकं दद्यान्मुक्तश्चैकाहिकाज्ज्वरात्॥" उपरोक्त मंत्रसे कचुपत्र, कगांडके पत्ते, घुइयांके पत्ते जवाफूल तिल जलसे चूहेके बिलमें तर्पण करै तौ ऐकाहिक ज्वर नष्ट होताहै ॥ १९४ ॥

अथ छेदमन्त्रः ।

ॐ बाणयुद्धे महाघोरे द्वादशार्कसमप्रभे ।
जातोऽसौक्षो महावीर्य्यो मुञ्चत्यैकाहिकाज्ज्वरात् ॥ १९५ ॥

अश्वत्थपत्रे विलिखेद्वाहोर्मन्त्रञ्च धारयेत्।
ऐकाहिकं ज्वरं हन्ति पुरुषो दक्षिणे क्रमात्१९६

ॐ बाणयुद्धे महाघोरे द्वादशार्कसमप्रभे। जातोऽसौक्षमहा-
वीर्यो मुंचत्यैकाहिकाज्ज्वरात्॥ उपरोक्त मंत्र पीपलके पत्तेपर लिखकर पुरुषके दाहिने हाथमें, स्त्रियोंके बांये हाथमें धारणकरनेसे ऐकाहिकज्वर नष्ट होताहै१९५-९६

समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विविदो नाम वानरः।
ज्वरमैकाहिकं हन्ति लिखिते च गृहोदरे।१९७।

'समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विविदो नाम वानरः' इस मंत्रको गृहोदरमें अर्थात् रोगीको सदा दीखतारहै ऐसे स्थानमें लिखकर लगानेसे ऐकाहिक ज्वर नष्ट होताहै॥ १९७॥

देवदारुकधन्याकं नागरं बृहतीद्वयम्।
दद्यात्पाचनकं पूर्व्वं सन्निपातज्वरापहम्॥१९८॥

देवदारु, धनियां, सोंठ, कटेहरी प्रत्येकको ३६ रत्ती लेकर आधसेर पानीमें औटावै, जब आधपाव बाकी

रहजाय तिसके साथ सेवन करनेसे सन्निपातज्वर नष्ट होताहै ॥ १९८ ॥

प्रभातसमये देवि मण्डं गोमूत्रसम्भवैः ।
पिबेत्तदर्द्धभागेन सन्निपातज्वरापहम् ॥१९९॥

हे देवि ! प्रातःकाल गायके मूत्रके साथ खीलोंका माड़ तैयार करके आधाभाग माड़ और गोमूत्र आधे भागके साथ सेवन करनेसे सन्निपातज्वर नष्ट होताहै ॥ १९९ ॥

शेफालिकात्वचं पुष्पमश्विन्यां वटिका कृता
अजारोमेण बध्नीयात्सन्निपातज्वरापहा२००

अश्विनी नक्षत्रमें निर्गुण्डीकी छाल और फूलोंसे गोली बनावै, बकरेकी रुओंके साथ बांधनेसे सन्निपात ज्वर नष्ट होताहै ॥ २०० ॥

अथ बहुमूत्राचिकित्सा ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चिकित्सां बहुमूत्रके ।
सेवयेदौषधं यत्नात्सात्म्यं भवति नान्यथा २०१

इसके उपरान्त बहुमूत्रकी चिकित्सा कहताहूं, निम्न औषधियोंके सेवन करनेसे रोग शांत होता है अन्यथा नहीं ॥ २०१ ॥

धात्रीरसस्य स्वरसं मधुना च पिबेत्सदा ।
बहुमूत्रक्षयं देवि क्षारञ्च वासकस्य वा ॥२०२॥

आमलेका क्वाथ अथवा रस शहतके साथ सेवन करनेसे बहुमूत्र नष्ट होता है ॥ २०२ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ।

अजाजीजगवीरं तु दधिमण्डं तु पाययेत् ।
लवणेन समायुक्तं मूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ॥२०३॥

अजवायन और सोंठ दहीके मांडके साथ या नोनयुक्त सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र नष्ट होताहै ॥ २०३ ॥

यवक्षारं सितायुक्तं मूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ।
स्वर्णशेफालिकामूलं मधुना यत्पिबेद्बुधः ॥
मूत्रकृच्छ्रं निहन्त्याशु सत्यं सत्यं न संशयः२०४

जवाखार और अमलतासकी जड़ सहतके साथ

सेवन करनेसे निश्चय ही मूत्रकृच्छ्र रोग शांत होता है ॥ २०४ ॥

पीतसारं गुडूच्यान्तु मधुना मेहनाशनम् ।
सर्व्वमेहहरो धात्र्या रसः क्षौद्रनिशाकरैः २०५॥

गिलोय, विजयसार शहतके साथ अथवा आमलेका रस शहत और हलदीके साथ सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट होताहै ॥ २०५ ॥

अथ बिन्दुक्षयचिकित्सा ।

घृतकुमारिकां पिष्ट्वा क्षीरेण यः पिबेन्नरः ॥
बिन्दुमात्रक्षयं देवि धात्रीञ्च बिल्वपत्रकम् २०६

हे देवि ! घीग्वारका गूदा दूधके साथ भक्षण करनेसे बिंदुक्षय रोग नष्ट होताहै ॥ २०६ ॥

धात्रीं हरीतकीञ्चैव कृष्णजीरकसंयुताम् ।
भक्षयेच्छयने काले बिन्दुस्रावक्षयो भवेत् २०७

सोनेके समय आमला, हरड़, कालाजीरा यह सम्पूर्ण पीसकर सेवनकरनेसे बिंदुक्षय रोग शांत होताहै॥२०७॥

यदा बद्धं भवेद्वीर्यं पादयोर्लेपयेत्तदा।
केतकीपुष्पमादाय दाडिमावचमूलकम् ॥२०८॥

जो वीर्य रुद्ध होजाय तो दोनों पैरोंमें केतकीके फूल-दाड़िम और वच एकसाथ पीसकर लेपकरै ॥ २०८ ॥

कृष्णगोभवदुग्धञ्च भक्षयेदृभृगुवासरे।
बिन्दुस्रावक्षयं कुर्य्याद्बिल्वमूलार्कमूलके ॥
अश्विन्यां वटिकां कृत्वा भक्षणान्नात्र संशयः२०९

शुक्रवारको कालीगायका दूध अश्विनी नक्षत्रमें बेलकी जड़ और आककी जड़ पीसकर गोलियां बनाकर खाय तो भी इस रोगका नाश होजाताहै ॥२०९॥

अथ कुरण्डचिकित्सा।

बाहवाल्यराजयञ्च पिष्ट्वा तच्चार्द्रकैः सह।
कुरण्डं नाशयेद्भद्रे लेपनान्नात्र संशयः ॥२१०॥
संपक्वं तैलमादाय मण्डूकरक्तमांसकैः।
मर्दयेद्भुजयोर्नित्यं कोषवृद्धिर्विनश्यति।
कोषवृद्धिक्षयं कुर्य्यात्तैलेन बाहुलेपनात् २११ ॥

घृतैर्नीलोत्पलं पिष्ट्वा लेपनाच्च कुरण्डहा।
अथवा गृहमण्डूकशोणितैर्लेपनात्तथा ॥ २१२॥

मेंढ़कके रुधिर और मांसमें पकाया हुआ तेल लेप करनेसे या घीके साथ नीलाकमल पीसकर लेपकरनेसे अथवा घरेलू मेढकका रुधिर लेप करनेसे कुरंड रोग जाता रहताहै ॥ २१०—२१२ ॥

कृष्णजीरकः शुण्ठी च पिप्पली मरिचं तथा।
कुरण्डं नाशयेद्देवि करञ्जमधुसंयुतम् ॥ २१३ ॥

कालाजीरा, सोंठ, पीपल और कालीमिरच इन सबको करंज रसके साथ पीसकर लेप कियाजाय तो कुरण्डरोगको आराम होताहै ॥ २१३ ॥

अथ कुरण्डगलगण्डचिकित्सा।

ब्रह्मयष्ट्यास्तु मूलन्तु पिष्ट्वा तण्डुलवारिणा।
सप्ताहे च हरेल्लेपात्कुरण्डगलगण्डयोः २१४ ॥

भारंगीकी जड़ चौलाईको पानीके साथ पीसकर

लेपकरनेसे एक सप्ताहमें कुरण्ड और गलगण्ड आराम होता है ॥ २१४ ॥

अथ भगन्दरचिकित्सा।

दाडिममूलं हरिद्रा च केतकी तस्य लेपनात्।
भगन्दरविनाशः स्यादेतद्योगविधानतः २१५॥

दाड़िमकी मूल, हल्दी और केतकीको एक साथ पीसकर लेपकरनेसे भगंदर रोग आराम होता है ॥ २१५॥

अथ कामलाचिकित्सा।

घोषाफलमघातश्च पीतकामलनाशनम्।
अथवा नस्यकं कुर्य्याद्बृहतीबीजं द्विभागकम्॥
दुष्टश्लेष्मविनिःसृत्य कामलान्मुच्यते नरः२१६॥

तुरईके द्वारा औषध करनेसे पीतकामला रोग नाशको प्राप्त होता है, अथवा चोंटलीको पीसकर उसका नस्य लेनेसे दुष्ट श्लेष्मा निकल जाती है और कामला रोगको आराम होता है ॥ २१६ ॥

अथ वैवर्ण्यचिकित्सा ।

कृष्णतिलैः ससिद्धार्थैस्तथैव कृष्णजीरकाः ।
समभागेन पिष्ट्वा वै वैवर्ण्यं मर्दनाद्धरेत्।२१७।

कालेतिल, सरसों और कालाजीरा बराबर पीसकर शरीरमें मर्दन करनेसे वैवर्ण्यका नाश होता है॥२१७॥

अथ कासचिकित्सा ।

त्रिफलां त्रिकटुञ्चैव समभागेन चूर्णितम् ।
मधुना सह सम्पानात्खण्डकासो विनश्यति२१८

आमला, हरड, बहेडा, सोंठ, पीपल और काली मिर्चका चूर्ण बराबर लेकर शहतके साथ मिलायकर चाटै तो खांसीका नाश होता है ॥ २१८ ॥

घृतेन पाचयेन्मूलं पत्रं च दालकस्य च ।
भक्षेद्दिनत्रयं यावच्छ्वासकासक्षयो भवेत्।२१९।

सुगंधवालाकी जड और पत्ते घीके साथ पकाकर तीन दिनतक खानेसे भी दम और खांसीको आराम होता है ॥ २१९ ॥

पिप्पली देवदारुश्च शुण्ठीचूर्णसमन्विता।
ऊर्द्धश्वासं तदा हन्ति पिबेदुष्णजलेन वै२२०॥

पीपल चूर्ण, देवदारुचूर्ण, और सोंठका चूर्ण इन सबको बराबर लेकर गरम पानीके साथ पीवै तो ऊर्ध्वश्वासको आराम होता है॥ २२०॥

अथ क्षयकासचिकित्सा।

नागकेशरमूलं च मधुना सह संपिबेत्।
वासकस्य च मूलं वा पर्युष्टं वारि यक्ष्महृत्२२१

नागकेशरका चूर्ण करके शहतके साथ सेवन करनेसे, और विसोंठेकी जड वासीपानीके साथ सेवन करनेसे क्षय कास दूर होजाता है॥ २२१॥

अशोकस्य च मूलानि अजाक्षीरेण भक्षयेत्।
क्षयरोगक्षयं कुर्य्यान्मूलं जीवेश्वरं मधु॥२२२॥

अशोककी जड़ बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे भी उक्तरोग दूर होता है॥ २२२॥

गवेधुकस्य मूलं वा भक्षयेन्मधुना सह ।
पिप्पलीमूलकं वापि दुग्धेन क्षयरोगहृत् २२३

गवेधुककी जड शहतके साथ और पीपलकी जड दूधके साथ सेवन करनेसे भी उक्तरोग नष्ट होता है ॥२२३॥

अथ नासार्शश्चिकित्सा ।

दूर्वादाडिमपुष्पे च आम्लातकहरीतकी ।
सर्व्वसंपेषणान्नस्यं नासारक्तस्रवापहम्॥ २२४॥

दूब,दाडिमपुष्प, अग्वाडा और हरीतकी एक साथ पीसकर नासले तो नाकसे बहता हुआ रुधिर बंद होजाता है ॥ २२४ ॥

अथ गुदार्शश्चिकित्सा ।

पिप्पलीञ्च हरिद्राञ्च गोमूत्रेण समन्विताम् ।
प्रक्षेपञ्च गुदद्वारे अर्शांसि विनिवारयेत्॥२२५॥

पीपल और हलदीको गोमूत्रके साथ पीसकर मलद्वारमें लेप करनेसे बवासीरको आराम होजाता है २२५

अभया नवनीतं च शर्करापिप्पलीयुता ।
पानादर्शो हरत्याशु नात्र कार्या विचारणा २२६

हरड, मक्खन, चीनी और पीपल इनको बराबर भक्षण करनेसे बवासीरको आराम होजाता है ॥२२६॥

अथ कर्णशूलचिकित्सा ।

तीव्रशूलान्तरे कर्णे सशब्दक्लेदवर्द्धिनि ।
शूलोन्मुक्तं क्षिपेत्कोष्ठं सैन्धवेनावचूर्णितम् ॥

जो कानमें बहुत दर्द हो, आवाज होती हो, मैल होगया हो तो सेंधेके साथ कुत्तेका मूत्र कुछेक गरम करके कानमें डाले ॥ २२७ ॥

अर्कपत्रं गृहीत्वा तु मन्दाग्नौ तापयेच्छनैः।
निष्पीड्य पूरयेत्कर्णे कर्णशूलं विनश्यति ॥

आकके पत्ते अग्निमें झुलसकर उनका अर्क कानके भीतर डालदेनेसे कानका दर्द दूर होजाता है ॥२२८॥

शतावरीं तण्डुलीयं मधुना कर्णपूरितम् ।
कर्णशूलं तदा हन्ति परं योगं वदामि ते २२९

शतावरी और जल चौलाईके रसको शहत्के साथ मिलायकर कानमें डालनेसे भी कानके दर्दको आराम होता है ॥ २२९ ॥

अथ चक्षुरोगचिकित्सा ।

निम्बपत्ररसं गुप्तिसमेतं चक्षुपूरितम् ।
चक्षुःशूलं क्षयं याति तक्रं बदरमूलकैः २३० ॥

मट्ठा और बेरीकी जड़को नीमके पत्तोंके रससे घिसकर नेत्रोंको भरदे तो नेत्रशूलको आराम हो जाता है ॥ २३० ॥

काकस्य रक्तपित्तञ्च भिक्षुकस्य च चक्षुषी ।
यत्नवान्साधकः श्रेष्ठो गृहीत्वैकत्र कारयेत् ॥
शुभे दिने च संध्यायां नेत्रमध्ये प्रदापयेत् ।
अन्धकारेऽपि देवेशि दिव्यदृष्टिं प्रदापयेत् २३२

काकका रुधिर और पित्त भिक्षुकीके नेत्र इनको एकत्र करके शुभदिनमें संध्याके समय नेत्रोंमें प्रदान करनेसे अंधकारमेंभी दिखाई देता है ॥ २३१ ॥ २३२ ॥

हस्तिशुंडारसेनैव चक्षुश्च पूरयेद्बुधः ।
चक्षुर्जो हन्यते रोगो निश्चितं शृणु पार्वति२३३

हे पार्वती ! हस्तिशुण्डाके रसको नेत्रोंमें भर दियाजाय तो निश्चयही नेत्ररोगको आराम होजाता है ॥२३३॥

अथ शिरोरोगचिकित्सा ।

विडङ्गं गन्धकश्चैव नीलोत्पलं तथैव च ।
गोमूत्रं कटुतैलं च दत्त्वा पाकं समाचरेत् ॥
शिवेप्राणप्रिये देवि शिरोरोगं विनाशयेत् २३४

बायविडंग, नीलोत्पल, गन्धक गोमूत्र और कड़वातेल को पाककी रीतिसे पकाकर मस्तकपर लगाया जाय तो शिरका दर्द दूर होजाता है ॥ २३४ ॥

दुग्धैःकृष्णतिलान्पिष्ट्वा लेपं दद्याच्छिरोपरि ।
शिरोव्यथा क्षयं याति गुडूचीमूलकेन वा २३५

काले तिल वा गिलोयकी जड़ दूधके साथ पीसकर मस्तकके ऊपर लेप करनेसे भी शिरका दर्द दूर होजाता है ॥ २३५ ॥

अथ पद्मगन्धचिकित्सा ।

हरिद्रा लवणं चैव मरिचं श्वेतसर्षपम् ॥
एकीकृत्य पेषयित्वा मुखे संघृष्य चर्व्वयेत् २३६
हल्दी, सेंधा नोन, मिर्च और सफेद सरसों इनको बराबर लेकर पीसले, फिर उसको चाबै तो मुखमेंसे कमलकी समान सुगंध निकलेगी ॥ २३६ ॥

अथ दन्तरोगचिकित्सा ।

केशराजस्य मूलं च आर्द्रकैः सह धारयेत् ।
तदा न पतते दन्तो दृढं स्याद्दन्तमूलकम् २३७
भांगरेकी जड़ और अदरक मुखमें धारणकरनेसे दांत नहीं गिरते ॥ २३७ ॥

अर्कपत्रेण तप्तेन दन्ते स्वेदं च कारयेत् ।
तदा न पतते दन्तो बकुलत्वक्सुचर्व्वणात२३८
अर्क पत्र तपाकर दांतमें पसीना देनेसे अथवा मौलसिरीकी त्वचा खानेसे दांत नहीं गिरते ॥ २३८ ॥

जातीपत्रपुनर्नवातिलकणाः कोदन्नकुष्ठं वचा
शुण्ठीदीपहरीतकीसमकृतं चूर्णं मुखे धारितम् ।
वातघ्नं क्रिमिकण्डुशूलशमनं सर्व्वामयध्वंसकृद्-
गन्धादिसमस्तदोषशमनं दन्तस्तु वज्रायते२३९

चमेली, विषखपरा, तिल, वनकोदों, कुड़ा, वच, सफेद जीरा, सोंठ और हरड़ बराबर बराबर लेकर चूर्णकर मुखमें धारण करनेसे वातकृमि कंडु शूल सब प्रकार-का दांतरोग और दन्तदोष नष्ट होताहै और दांत वज्र-की समान मजबूत होजाते हैं ॥ २३९ ॥

अथातीसारचिकित्सा ।

अथातीसाररक्तातिसारयोः शृणु योगकम् ।
स्वल्पप्रयोगमात्रेण यतो रोगात्प्रमुच्यते २४०॥

अब अतीसार और रक्तातिसारका प्रयोग सुनो जिसके अल्पप्रयोगसे मनुष्य रोगसे छूटजाताहै ॥२४०॥

मूलानां सहदेव्यास्तु कृत्वा च सप्तखण्डकान्
रक्तसूत्रैः कटौ बद्धा सव्वातीसारनाशनम्२४१

सहदेवीकी जड़के सात टुकडे कर लाल डोरेसे बांध कमरमें धारणकरनेसे अतीसार नष्ट होता है ॥२४१॥

तालमूलीं च मधुना समभागेन यः पिबेत् ।
रक्तातीसारक्षयकृन्नारिकेलजलं पिबेत् ॥२४२॥

शतावरी और शहतको मिलायकर खावै ऊपरसे नारियलका जल पिये तो अतीसार नष्ट होता है२४२॥

अथ परिणामशूलचिकित्सा ।

हिंगुलं बकुलत्वचं पिष्ट्वा च क्वाथितोदकैः ।
परिणामस्य शूलस्य कथितं परिवर्तनम्॥२४३॥

हींग और बबूरकी छालको पीस क्वाथ बनाकर पीनेसे परिणामशूल नष्ट होता है ॥ २४३ ॥

लोहचूर्णसमायुक्तं त्रिफलाचूर्णमेव च ।
मधुना खादितं देवि ह्यामाख्यशूलनाशनम्२४४

त्रिफलाचूर्ण और लोहचूर्ण शहतके साथ सेवन करने-
से परिणामशूल नष्ट होताहै ॥ २४४ ॥

रक्तोत्पलमपामार्ग शोभाञ्जनवचस्तथा ।
लवणं च समं भक्षेदामशूलं विनश्यति २४५

लालकमल, चिरचिटा, सैंजनेके बीज, वच और सैंधानोन समान लेकर सेवनकरनेसे परिणामशूल नष्ट होताहै ॥ २४५ ॥

मृगशृङ्गमग्निदग्धं गव्याजाम्बुसमन्वितम् ।
पीतं सत्पृष्ठशूलानां भवेन्नाशकरं प्रिये ॥२४६॥

हिरनका सींग जलाकर गोमूत्र अथवा बकरीके मूत्रके साथ सेवन करनेसे हृदयशूल और पीठशूल नष्ट होताहै ॥ २४६ ॥

अथ विचर्चिकाचिकित्सा ।

एरण्डमूलकं पत्रं भृङ्गराजरसस्तथा ।
अनयाकांजिकान्पिष्ट्वालेपोविचर्चिकापहः२४७

अंडकी जड़ और पत्ते भांगरेके रसके साथ पीसकर लेप करै तो विचर्चिकारोग नष्ट होताहै ॥ २४७ ॥

अथ कुष्ठरोगचिकित्सा।

श्वेताकृष्णापराजितामूलंपिष्ट्वालेपश्चकुष्ठजित्
अथवा पारिभद्रस्य मूलैस्तु गुटिकाश्चरेत्२४८
तैलेन पाचितास्तासां भक्षणं कुष्ठनाशनम्।
घृतैरुष्णोदकैर्वापि सर्वं कुष्ठं विनश्यति॥२४९॥

श्वेत वा कृष्ण विष्णुक्रान्ताकी जड पीसकर लेप करै तो कोढ़ नष्ट होय और फरहदकी जड लाकर गोली बनाय तेलमें पकावै फिर उक्त वटी घी अथवा गरम जलके साथ भक्षण करै तो कोढ़ नष्ट होताहै ॥२४८॥ ॥ २४९ ॥

विश्वनिंबदलानां च चूर्णमामलकैः सह।
प्रत्यहं भक्षयेद्यस्तुतस्यकुष्ठं विनश्यति ॥२५०॥

कोढ़ी मनुष्य यदि सोंठ और नीमके पत्तोंका चूर्ण

आमलेके साथ प्रतिदिन भक्षण करै तो उसका कोढ़ नष्ट होय ॥ २५० ॥

सोमराजस्य बीजानि नवनीतेन मेलयेत् ।
मधुना खादितानि स्युस्तानि कुष्ठहराणिवै२५१

वाघचीके बीज मक्खनके साथ मिलाकर शहतके साथ भक्षण करै तो कोढ़ नष्ट हो ॥ २५१ ॥

कुशा हरीतकी दूर्वा तण्डुलं चार्कक्षीरकम् ।
कदलीवन्दनं शुष्कं क्षारं कृत्वा तु लेपनम्२५२

कुशा, हरड, दूब, चावल, आकका दूध, आटा और केला इन सबका क्षार तयारकर लेप करै तो कोढ नष्ट हो ॥ २५२ ॥

श्वेतकुष्ठक्षयं कुर्याच्छाचिशाकस्यमूलकम्२५३

शालिचकी जड़ सेवनकरनेसे सफेद कोढ़ नष्ट होताहै ॥ २५३ ॥

निम्बं त्रिभागं त्रिकटु गुडूची च हरीतकी ॥
एकभागजले पिष्ट्वा सर्वकुष्ठस्य नाशनम्२५४ ॥

सोंठ,पीपल, मिर्च प्रत्येकको तीन२भाग नीमके पत्ते एकभाग गिलोय एकभागको लेकर लेपकरै तो कोढ़ नष्ट हो ॥ २५४ ॥

अथ प्लीहारोगचिकित्सा ।

चित्रकं मूलकं पिष्ट्वा कृत्वा तु वटिकात्रयम् ॥
कदलीपक्वमध्ये तु भक्षणात्प्लीहनाशनम् २५५॥

चीतेकी जड़ पीसकर गोली बनावे और पके केलेके भीतर करके तीन दिन तीन गोली खानेसे प्लीहारोग नष्ट होताहै ॥ २५५ ॥

अथ विस्फोटकचिकित्सा ।

पिष्ट्वाकृष्णतिलांश्चैव कांजिकैः पाचयेत्ततः ।
समभागोदकैः पिष्ट्वा मारिचं रक्तचन्दनम्॥२५६
दद्यादारम्भके पूर्वं विस्फोटव्रणनाशनम् ।
महानस्य तु मूलं च पिष्ट्वालोड्य जले मुदा ।
गंडशोथः क्षयं याति विस्फोटं च तथैव च२५७

पिसेहुए काले तिल कांजीके साथ पकाकर लेप करनेसे व्रणशोथ अच्छा होता है, और आरंभमें मिर्च गालचंदन समान लेकर जलके साथ लेप करै तो गालका फूलना विस्फोटकव्रण नष्ट होता है ॥२५६ ॥ २५७॥

अथ अर्बुदरोगचिकित्सा ।

भूमिकूष्मांडमूलं च पिष्ट्वालोड्य जलेन तु ।
पाचयेदुष्णफेनस्य लेपादर्बुदनाशनम् ॥२५८॥

भूमिकूष्मांडकी जड़को जलमें घिसे और उस जलको आंचमें पकावै पकते समय जो फेन निकले उन फेनोंका लेप करनेसे अर्बुदरोग नष्ट होता है ॥२५८॥

अथ दग्धव्रणचिकित्सा ।

तिलतैलैर्यवान्दग्ध्वा समं कृत्वा तु मेलयेत्
तेनैव लेपनात्तूर्णमग्निदाही सुखी भवेत् २५९॥

अग्निदग्ध हो तो जौको तिलके तेलमें जलाकर जले हुए स्थानपर लगानेसे जलन उसी समय शांत होता है ॥ २५९ ॥

तिलाश्चैवाग्निना दग्धाः सर्वभस्मसमन्वितम्।
अग्निदग्धव्रणं नश्येदनेनैवोपलेपनात् ॥ २६०॥

तिलोंको जलाकर तेलके साथ लेपकरनेसे फोड़ा वा घाव अच्छा होता है ॥ २६० ॥

अथ श्लीपदचिकित्सा।

अर्कमूलं समुत्पाट्य उत्तरे चार्कवासरे।
तन्मूलं रक्तसूत्रेण धारयञ्श्लीपदञ्जयेत्॥२६१ ॥

श्लीपद होनेसे रविवारके दिन उत्तर दिशामें आककी जडको लाल डोरेसे धारण करै तो श्लीपद नष्ट होता है ॥ २६१ ॥

बलाचातिबलालोध्रलेपनाच्छ्लीपदक्षयः।
मूलं दंडोत्पलं वापि हरितालेन लेपयेत् २६२

श्लीपदमें कटेरी, गंगेरन और लोधको एकत्र करके लेप करनेसे श्लीपदरोग नष्ट होता है। श्लीपदमें दंडोत्पल-की जड़ हरतालके साथ लगानेसे सूखजाता है ॥२६२॥

निर्गुण्डीकेरण्डसुवर्णपत्रेह्यषाहमिनैः ।
श्वेतसर्षपैश्च पिष्ट्वा तु लेपयेद्बहुमङ्गलाय ।
चिरोत्थितं श्लीपदं च निहन्तिनिश्चितं सदा २६३

सम्हालूकी जड, अंडकी जड़, जमालगोटेको सफेद सरसोंके साथ एकत्र पीसकर लेप करै तो निश्चय श्लीपद रोग नष्ट होताहै ॥ २६३ ॥

अथ निद्रामोक्षोपायः ।

शृङ्गंमाहिषं कूष्माण्डं पिष्ट्वा तत्समभागकम् ।
लेपयेत्कुक्षिपृष्ठे च तस्य निद्राक्षयो भवेत् २६४

भैंसका सींग और पेठा समान ले पीसकर कोख और पीठमें लेप करनेसे निद्राक्षय होती है॥ २६४ ॥

शोभाञ्जनस्य बीजानि नीलोत्पलस्य पुष्पकम् ।
नागेश्वरं समं पिष्ट्वा निद्रांमुंचति चांजनात् २६५

सैंजनेके बीज, नीलाकमल, नागकेशर समान ले एकत्र पीस अंजन देनेसे नींद नहीं आतीहै ॥ २६५ ॥

बृहतीफलं सुपक्वं च पिष्ट्वा च मधुयष्टिभिः
यस्य निद्राञ्जनं दद्याद्भुवं निद्रां विनाशयेत् २६६

पकी कटेरीके फल और मुलहटीको समान ले पीस-
कर अंजन लगानेसे नींद नहीं आती है ॥ २६६ ॥

अथ निद्राचिकित्सा ।

मूलकं काकजंघाया धारयेच्छिरसा नरः ।
मन्त्रेणैवान्विते यस्तु भवेन्निद्रा बलीयसी २६७

जो मनुष्य मंत्र पढ़कर काकजंघाकी जड़ मस्तकपर
धारण करै तो उसको बड़ी नींद आती है ॥२६७ ॥

मन्त्रो यथा—ॐसिद्धसिद्धेयोगिनिमहानिद्रेस्वाहा
महानिद्रायनीं देवीं मन्त्रेणानेन पूजयेत् ।
तेनैव गृहमध्ये च मन्त्रं शतत्रयं जपेत् ॥
महानिद्रायना भूत्वा सर्वे स्वपन्ति तज्जनाः २६८

ॐसिद्धे सिद्धे योगिनि महानिद्रे स्वाहा । इस मंत्रसे

निद्रादेवीकी पूजा करै और इसको जिसघरमें तीनसौ बार जपै तो उस घरके सब मनुष्य सो जाते हैं ॥ २६८ ॥

श्मशानस्थां क्षिपेद्देहे कृष्णगोमूत्रमृत्तिकाम् ।
एवं निद्रामयीमाया संक्षेपात्कथितामया २६९॥

स्मशानकी मट्टी और कालीगौका मूत्र शरीरमें लगानेसे निद्रामयी माया उपस्थित होतीहै यह प्रयोग संक्षेपसे कहा है २६९ ॥

अथवान्यप्रकारेण निद्राणीमन्त्र उच्यते ॥
यस्योच्चारणमात्रेण निद्रा भवति चान्यथा २७०

अब निद्राका अन्य प्रकारसे मंत्र कहताहूं जिसके उच्चारणमात्रसे नींद आजातीहै ॥ २७० ॥

ॐह्रींश्रींक्लींमहानिद्रेश्वरि भैरवि अमुकस्थानस्थितसकलचराचरजीवजन्तुप्राणिनो घोरनिद्रावशान्कुरु २ स्वाहा इति मंत्रः ।
मंत्रं हि प्रजपेद्देवि लक्षमेकं विधानतः ॥ २७१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महानिद्रेश्वरि भैरवि अमुकस्थानस्थित सकलचराचरजीवजन्तुप्राणिनो घोरानिद्रावशान्कुरु स्वाहा । इस मंत्रको विधानसे एक लाख जपकर प्रथम सिद्ध करले फिर एकबारके जपनेसे कार्यकी सिद्धि होतीहै ॥ २७१ ॥

अथ अदृश्योपायः ।

दण्डकाकस्य रुधिरं पित्तञ्च जम्बुकस्य च ।
भल्लूकोलूकयोरस्थिवामदक्षिणसंस्थितम्२७२
पिष्ट्वैतानि समञ्चैव वटिकां कारयेत्ततः ।
छायायां कारयेच्छुष्कामञ्जनं तत्प्रदापयेत् २७३
यावन्मात्रं स्थितं नेत्रेऽदृश्यो भवति सुन्दरि ।
पादयोःस्तनयोरेवं युक्त्योक्तं तु मनीषिभिः ७४

हे सुन्दरि कागका रक्त,शृगालका पित्त, रीछके बायें अंगकी हड्डी, उल्लूके दहने अंगकी हड्डी इन सबको बराबर लेकर पीसडाले और गोली बनाले फिर इन

गोलियोंको छायामें सुखाकर आवश्यकता होनेपर घिस-कर नेत्रमें अंजन लगादे। यह अंजन जबतक जिसके नेत्रमें लगारहेगा तबतक उसको कोई नहीं देख सकेगा। इस युक्तिसे पैरोंमें और स्तनोंमेंभी अंजन लगावै ॥ २७२–२७४ ॥

चित्राग्नि खंजरीटस्य विष्ठा फेनो हयस्य च।
शोभाञ्जनं चाषनेत्रे नर एतैश्च धूपितः ॥
अदृश्यस्त्रिदशैः सर्वैः किं पुनर्मनुजैः प्रिये२७५

अथ भेल्की।

वसुमतोरमाटिमुत्रिपाचोम काडकारीअंगदि-लुमपुरुकालिकारआज्ञा मुत्रिलुकायोलम्। कालिकारआज्ञा अनेनमन्त्रेणप्राचीवायूत्तरात् मृत्तिका अमावास्या मंगलवारे–अन्यत् किंचिदस्पृश्यगृहीत्वातन्मृत्तिकस्वेदेहे. फूत्-कारोदेयः तदातस्यमानवाहयाति ॥

१ अस्यार्थस्तुनावगम्यते।

हे प्रिये!अशोक,चित्रककी जड़,खंजनपक्षीकी विष्ठा, घोड़ेके मुखका फेन, सैंजनेके बीज और स्वर्णचातक या नीलकंठपक्षीके दोनों नेत्र इन सबकी धूप देनेसे वह मनुष्य देवताओंकोभी नहीं दीखसकताहै फिर आदमीकी तो बातही नहीं है ॥ २७५ ॥

अथ अदृश्यनिधिदर्शनोपायः ।

कनकधत्तूरमूलञ्च तथा सप्तदलस्य च ।
मुक्तकेशेनचोत्पाट्य मूलं यावत्तु वल्कलैः२७६॥
एतान्मुखे च संधृत्य सर्व्वामुद्दश्यते नरैः ।
पातालतलपर्य्यन्तं यत्रयत्रस्थितोनिधिः२७७॥

धतूरेकी जड़ और छतवनकी जड़को शिखाकी गांठ खोलकर उखाडे उसकी छालको मुखमें धारण करनेसे पातालमें स्थितहुई निधिभी दिखाई देती है ॥२७६॥ ॥ २७७ ॥

अथ निगड़भङ्गप्रयोगः ।

तत्र कालीसाधनम् ।

आदौ ध्यानम्—रक्तवस्त्रपरीधाना दिव्य-गन्धानुलेपना । त्रिनयना हास्यवदना चतुर्भुजा मणिमुकुटभूषिता शववाहना मु-ण्डमालाविभूषिता कर्तरीखर्परधारिणी मा-मुद्धर देवि कात्यायनि ॥ इति ध्यात्वा मन्त्रं पठेत् । कृष्णजयन्तीमूलञ्च शनिम-ङ्गलवासरे समुत्पाट्य गुवाकेन खादित्वा स्वदेहे स्वयम् ॥ २७८ ॥

दद्यात्फूत्कारं देवेशि मन्त्रेणानेन साधकः । सिद्धिं कुर्य्यान्मनुं जप्त्वा चाष्टोत्तर-सहस्रकम् ॥ २७९ ॥

कार्य्यसिद्धिर्भवेत्सत्यंनात्रकार्या विचारणा२८०

रक्तवस्त्रपरिधाना दिव्यगंधानुलेपना त्रिनयना हास्य-वदना चतुर्भुजा मणिमुकुटभूषिता शववाहना मुंडमाला-

विभूषिता कर्त्तरी खर्परधारिणी (त्वं मामुद्धर) देवि
कात्यायनि इस भांतिसे कालीका ध्यान करके साधकको
चाहिये कि शनि या मंगलवारको कालीजयंती की जड़
उखाडकर सुपारीके साथ खाय और मंत्रको पढ़कर
अपने शरीरपर फूंकमारे और१०८ वार मंत्र जपे तो
निश्चय सिद्धि प्राप्तहोती है ॥ २७८॥२७९॥२८० ॥

ॐ चामुण्डे वज्रपाणि ह्रीं फट् स्वाहा ।
अनेन सहस्रजपेन बन्धोमोक्षो भवेद्ध्रुवम्२८१

ॐचामुंडे वज्रपाणि ह्रींफट्स्वाहा । यह सहस्रबार
जपनेसे मनुष्य निश्चयही बंधनसे छूटजाता है ॥२८१॥

निगडं कपाटं देवि अवश्यं भञ्जनं शुभम् ।
छिनत्ति जालं दासस्य स्तम्भयेत्तैलयन्त्रकम् ।
नश्येत्पाकं कुलालस्यगवांक्षीरस्यनाशनम्२८२

हे देवि ! पूर्वोक्त उपायसे निगड़भंजन, कपाटभंजन
दासका जालच्छेद, तैलयंत्रस्तंभन, कुम्हारका चाक नाश
और गायका दूध नष्ट होता है ॥ २८२ ॥

अथ देहदुर्गन्धहरणम् ।

तिलं सर्षपसंयुक्तं हरिद्रां मेथिकां तथा ।
पिष्ट्वा तल्लेपनाद्गाढं गात्रगंधो विनश्यति २८३

तिल, सरसों, हल्दी, मेथी एकत्र पीसकर शरीरमें लेप करै तो दुर्गन्ध नष्ट होय ॥ २८३ ॥

आर्द्रकस्य च पुष्पाणि तुम्बीपत्रयुतानि च ।
सलोध्राणि च तल्लेपाद्देहदुर्गंधमाहरेत्॥२८४॥

अदरख, कड़वीतोंबीके पत्ते और लोधका लेप करनेसे भी देहकी दुर्गंधि नष्ट होजाती है ॥ २८४ ॥

अथ देहसौगन्ध्यजननम् ।

शुष्काम्रबीजं हरीतकीं सौन्धामामलकस्य च ।
उद्वर्त्तनं भक्षणान्ते देहसौगंध्यवर्द्धनम् ॥२८५॥

सूखी आमकी गुठली और हरड़ आमलेका चूर्णके साथ घिसकर खानेसे देहमें सुगंध बढ़जाती है॥२८५॥

कुष्ठञ्च चूर्णकं कृत्वा मधुसर्पिःसमन्वितम् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय पद्मगंधः प्रजायते ॥२८६॥

कुड़ेके चूर्णको शहत और घीके साथ प्रतिदिन प्रातःकाल खानेसे शरीरमें कमलकी समान गंध होजाती है ॥ २८६ ॥

अथ कान्तिजननम् ।

अतसीमाषगोधूमचूर्णं कृत्वा तु पिप्पलीम् ।
घृतेन लेपयेद्गात्रे एभिः सह विचक्षणः ॥
कंदर्पसदृशी कांतिर्भवेन्नित्यं विलेपनात्॥२८७॥

अलसी, उर्दकी दाल, गेहूं और पीपलका चूर्ण घीके साथ शरीरमें लगानेसे कामदेवकी समान कांतिमान होजाता है ॥ २८७ ॥

धात्रीकुसुममानीय फलं तत्र च यद्धृतम् ।
जम्बूफलस्याथ रसे मधुना सह पेषयेत् ॥
वराङ्गलेपनादेव वृद्धा कान्तिमती भवेत् २८८

आमलेके फूल और फल, जामनके रस और शहतके साथ पीसकर वराङ्गमें लेपकरनेसे वृद्धा स्त्री कान्तिमती होजाती है ॥ २८८ ॥

अथ पुष्टिजननम् ।

धातकीं सोमराजञ्च क्षीरेण सह भक्षयेत् ।
दुर्बलोपिभवेत्स्थूलोनात्रकार्य्याविचारणा २८९

धायफल और बावची पीसकर गायके दूधके साथ भक्षण करै तो दुर्बलभी स्थूल होजाय ॥ २८९ ॥

अथ मुखसौगंध्यजननम् ।

यः कुष्ठचूर्णं मधुना घृतेन कक्कोलान्वितम् ।
मासैकमात्रेण याति केतकीकुसुमोपमम् २९०॥

जो मनुष्य कूठ और शीतलचीनीके चूर्णको घीके साथ मिलाकर १ महीनेतक सेवनकरै तो उसके मुखसे केतकीके समान सुगंध निकलने लगती है॥२९० ॥

अथ सुस्वरजननम् ।

हरिद्रा च वचा कुष्ठं पिप्पली च यमानिका ।
मरिचं सैंधवं शुण्ठी एषां चूर्णं तु कारयेत् ॥
मधुना सहितं चूर्णं पेषयित्वा शिलातले२९१॥

जिसको किन्नरकी समान अपनी सुरीली आवाज करनी हो उसको हल्दी, वच, कुड़ा, पीपल, अजवायन, मिर्च, सैंधा, सोंठ इनका चूर्ण समान शहतके साथ सेवन करना उचित है ॥ २९१ ॥

दिनैश्च सप्तभिश्चैव भक्षितञ्च निरन्तरम् ।
जायते सुस्वरं पुंसां किन्नरैःसह गीयते॥२९२॥

वह प्रतिदिन सप्ताहभर सेवनकरनेसे गंधर्वकी समान गानेमें समर्थ होता है ॥ २९२ ॥

अथ लोमपातनम् ।

हरीतालं कदलीदलभस्मना एकयोगेन ।
चोद्वर्त्य लोमपातनकं भवेत् ॥ २९३ ॥

हरताल और केलेके पत्तेकी भस्मको एकत्र कर घिसनेसे रोम गिरजातेहैं ॥ २९३ ॥

अथ केशस्य वैवर्ण्यहरणम् ।

मुस्तकं सर्षपश्चैव उशीरञ्च तथैव च ।
हरीतकी नखी चैव आमलकी समन्ततः २९४
सर्व्वं समं समाहृत्य पेषयित्वा विधानतः ।
केशमूलं समालिम्पन्मेघतुल्यकचस्ततः२९५॥

मोथा, सरसों, खसकी जड़, हड, नखी और आमला इन सबको बराबर लेकर पीसै फिर लेपकरनेसे निःसन्देह बाल मेघकी समान काले होजातेहैं ॥ २९४।२९५॥

अथ स्तनगुणाधानम् ।

स्नाविणीरसक्काथे तु तैलं सिद्धं तिलोद्भवम् ।
तत्तैलं तिलकेनापि स्तनस्योपरि लेपयेत् ॥
काठिन्यं वर्धते तेन पतितश्चोत्थितो भवेत्२९६

गोरखमुंडीके रसके साथ तिलका तेल सिद्ध करके उस तेलको स्तनोंमें लगानेसे स्तन कठिन होते, बढ़ते और गिरेहुए भी उठजातेहैं ॥ २९६ ॥

वृद्धा वा कन्यका वापि क्षीणौ यस्याः पयोधरौ।
श्वेतौंड्रस्य कुसुमं कृष्णधेनुपयोऽन्वितम् ॥
पिष्ट्वा स्तनयुगे दद्याद्भवेत्पीनपयोधरा ॥२९७॥

सफेद जवाखारका फूल काली गायके दूधके साथ पीसकर दोनों स्तनोंमें मलनेसे वृद्धा अथवा कन्याके क्षीण पयोधर भी पुष्ट होजातेहैं ॥ २९७ ॥

वचाश्वगन्धासंयुक्ता अश्वारिपत्रकन्तथा ।
गजपिप्पलिकायुक्तंसद्योभिन्नजलेन च॥२९८॥
पेषयित्वा विधानेन लेपेयत्स्तनमण्डले ।
पतते न कदाचित्तु आम्रतालफलं यथा॥२९९॥

वच और असंगधको कनेरके पत्तोंके साथ पीसकर स्तनोंपर लेप करे तो गिरेहुए स्तनभी कच्चे आम और तालफलकी समान होजातेहैं ॥ २९८ । २९९ ॥

रसं गाम्भारीपत्रस्य तत्समं तिलतैलकम् ।
समानजलभागञ्च दत्त्वा पाकंसमाचरेत्३००॥
तैलशेषं परिज्ञाय क्षौममन्तेन शोधयेत् ।
कुचप्रलेपनाद्देवि लोहवज्जायते ध्रुवम् ॥३०१॥

कुंभेरके पत्ते और तिलके तेलको बराबर ले सिद्ध करै तेल पकजानेपर वस्त्रसे छानले फिर उसे स्तनोंपर लगावै तो स्तन निश्चय लोहेकी समान कठोर होजातेहैं ॥ ३०० ॥ ३०१ ॥

अथ सौभाग्यजननम् ।

केशरञ्चैव निम्बञ्च पङ्कजञ्च निरामयम् ।
धातकीफलपुष्पञ्च जम्बुदुग्धौंड्रसंयुतम् ३०२॥
पिष्ट्वा मधुयुतं लेपाद्वन्ध्यापि लभते सुतम् ।
वृद्धा नवप्रसूता वा दुर्भगासुभगा भवेत्॥३०३॥

नागेश्वर, नीम, कमल, धायफल और जामनका रस दूधके साथ पीस शहत मिलाय वराङ्ग देशमें लेप

करनेसे वंध्या स्त्री भी पुत्रवती होती है और दुर्भगा सुभगा होती है ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥

अथ वराङ्गलेपः ।

निम्बकाष्ठेन मधुना धूपयेत्तु भगं स्त्रियाः ।
सुभगासौ भवेन्नारी पतिर्दासो भविष्यति ३०४॥

यदि स्त्रीकी योनिको शहतके साथ नीमकी लकडीसे धूपित करै तो वह सौभाग्यवती हो और उसका पति उसका दास बनकर रहे ॥ ३०४ ॥

खञ्जरीटस्य मांसन्तु मधुना सह पेषयेत् ।
प्रातःकालेयोनिलेपात्पुरुषोदासतामियात् ३०५

जो स्त्री खंजनपक्षीका मांस शहतके साथ पीसकर प्रातःकाल योनिमें लेप करै तो पुरुष उसका दास होकर रहे ॥ ३०५ ॥

माहिषं नवनीतञ्च कुष्ठञ्च मधुयष्टिकम् ।
भगलेपेन सौभाग्यात्पतिर्दासो भविष्यति ३०६

भैंसका मक्खन, कुडा, मुलहठी, एकसाथ पीसकर योनिमें लेप करनेसे पति दासकी समान रहता है ३०६॥

माहिषं नवनीतञ्च मिश्रितं तत्समं मधु।
बदरीबीजसारञ्च पिष्ट्वा एकत्र कारयेत् ॥
एभिःसंमर्द्दनांते तुतेजस्विन्यङ्गना भवेत् ३०७॥

भैंसका मक्खन, शहत और बेरकी गुठलीकी मींगी एकत्र पीसकर योनिमें मलनेसे स्त्री तेजस्विनी होती है॥ ३०७ ॥

सैन्धवं कृष्णलवणं सौवीरं मत्स्यपित्तकम्।
मधुसर्पिः सितायुक्तं कुर्य्यात्तद्भगलेपितम् ॥
यःपुमान्मैथुनंगच्छेन्नान्यां नारीं सगच्छति ३०८

सेंधानोंन, कालानोंन, कांजी और मछलीका पित्ता, शहत, घी और बूराके साथ मिलाकर योनिमें लेप करै वह स्त्री जिसके साथ रमण करे वह पुरुष फिर दूसरी स्त्रीकी इच्छा नहीं करता है॥ ३०८ ॥

अथ स्त्रीवशीकरणम् ।

पुष्ये चैव हरेत्पुष्पं भरण्यान्तु फलन्तथा ।
पल्लवं च विशाखायां हस्ते वै पत्रमेव च ॥
मूले चैव तथा मूलं धत्तूरस्य समानयेत् ३०९
पिष्ट्वा कर्पूरयोगेन रोचनां कुंकुमेन च ॥
तिलकैः स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुन्धती ३१०

पुष्य नक्षत्रमें धतूरेके फूल, भरणीमें फल, विशाखामें पत्ते अथवा हस्तमें पत्ते और मूलमें जड लाकर कपूर, गोरोचन और केसरके साथ एकत्र पीसकर तिलक लगानेसे साक्षात् अरुन्धतीकी समान स्त्री भी वशीभूत होजाती है फिर औरकी बातही क्या है ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥

कोकिलाक्षं शूकशिम्बी तथैव च शतावरी ।
गोक्षुरं गणिकारञ्च वाट्यालकं तथैव च॥३११॥
महाकूष्माण्डमूलञ्च एकीकृत्यैव चूर्णयेत् ।
शुष्कपात्रेण तच्चूर्णं रक्षयेद्यत्नपूर्वकम् ॥३१२॥

तालमखाने, कौंच, शतावरी, गोखरू, अनियारी, खरेंटी, पेठेकी जड़ इन सबका चूर्णकर शुद्ध बर्तनमें यत्नपूर्वक रक्खे ॥ ३११ ॥ ३१२ ॥

दुग्धेन सहितं देवि पिबेद् रात्रौ समाहितः ।
नानागुणो भवेत्तस्मात्कामिनीवंचको भवेत् ३१३

फिर हे देवि ! एकचित्त होकर दूधके साथ रातमें सेवन करे तो वह पुरुष विविधगुणी और कामिनी-वंचक हो ॥ ३१३ ॥

कन्दर्पतुल्यो नारीणां दर्पहन्ता भविष्यति ३१४॥

और कामदेवकी समान सुन्दर और अभिमान-हारी हो ॥ ३१४ ॥

पुष्यायां वा मघायां वा हस्तायां च तथैव च ।
श्वेतार्कमूलमानीय कट्यां बद्धा रतिं चरेत् ॥
पतिपुत्रौपरित्यज्य तस्यार्थे व्रजति ध्रुवम् ३१५

जो मनुष्य पुष्य मघा अथवा हस्त नक्षत्रमें सफेद आककी जड़ उखाड़कर कमरमें बांध रमण करै तो वह स्त्री पति पुत्र त्यागकर उसीके पास जाती है ॥३१५॥

ॐ चामुण्डे जयजय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय सर्व्वं मां त्वं दददद स्वाहा । इमं मन्त्रमेकादशवारं जप्त्वा पुष्पमभिमन्त्र्य यस्यै दीयते सा तस्य वश्या भवति ॥३१६॥

ॐ"चामुंडे जयजय स्तंभय स्तंभय मोहयमोहय सर्व मां त्वं दददद स्वाहा" इस मंत्रको ग्यारहवार जपकर फूल अभिमंत्रित कर जिसको दे वह उसके वशीभूत होजाती है ॥ ३१६ ॥

ॐकामदेवहस्तपर्ण उत्तमं कुरुकुरु स्वाहा ?। अनेन सप्तधाभिमन्त्र्य यां स्पृशति सा वश्या भवति ॥ ३१७ ॥

ॐ "कामदेव हस्तपर्ण उत्तमं कुरुकुरु स्वाहा"

इस मंत्रको सातवार पढ़कर जिसको स्पर्श करै वह उसके वशीभूत होजाती है ॥ ३१७ ॥

अथ दम्पतिप्रीतिजननम् ।

ब्रह्मयष्टिं वचां कुष्ठं मधुना सह पेषयेत् ।
अङ्गलेपाच्च वनिता नान्यभर्त्तारमिच्छति ३१८

भारंगी, वच और कूठ बराबर शहतके साथ पीसकर जो अंगमें लेप करै तो स्त्री उसके शिवाय अन्य पतिकी इच्छा न करै ॥ ३१८ ॥

रतिकाले महादेवि शृणुष्व पर्व्वतात्मजे ।
निजशुक्रं गृहीत्वा तु वामहस्ते नयेत्पुमान् ॥
कामिनीवामचरणे लेपयेत्स स्त्रियाः प्रियः३१९

हे महादेवि ! जो पुरुष रतिकालमें अपना वीर्य बांयें हाथमें लेकर कामिनीके बांये चरणमें लेप करै तो वह उस स्त्रीका प्रिय हो ॥ ३१९ ॥

नीलोत्पलसमं पूगं प्रदद्याच्चापराजिताम् ।
यस्यां मनोभिवाञ्छा स्याद्वशं याति वराङ्गना।

पुरुष जिस स्त्रीके साथ मिलनेकी इच्छा करै उसको यदि नीलोत्पल, सुपारी और हारसिंगार समान लेकर दे तो वह स्त्री अवश्यही उसके वशीभूत होजातीहै ३२०

हयमारकमंजिष्ठामालतीकुसुमानि च ।
तण्डुलांश्च प्रियंगुञ्च पेषयेदेकयोगतः ॥
अनेन लेपयेल्लिङ्गं कामिनीवशकृद्भवेत ३२१॥

मजीठ, मालतीपुष्प, चावल, प्रियंगूके फूल एकसाथ पीसकर कामध्वजापर लेप करै तो स्त्री उसके वशीभूत हो जाती है ॥ ३२१ ॥

कपित्थरसकल्हारपिप्पलीमधुयष्टिकाः ।
मधुना च समं पिष्ट्वा लेपनाच्च वरांगयोः ॥
दम्पती प्रीतिमायातःप्राणान्तेपिन तद्व्ययः ३२२

जो दम्पती कैथका रस, लाल कमल, पीपल, मुलहटी इनको बराबर लेकर पीस शहत मिलाय परस्पर वरा-

ङ्गमें लेप करैं तो उनके प्राणान्त होनेपरभी परस्परमें विच्छेद न हो ॥ ३२२ ॥

सैन्धवञ्च महादेवि पारावतमलं मधु ।
एभिस्तु लिप्तलिंगो हि कामिनीवशकृद्भवेत्॥
दम्पत्योःप्रीतिजनने नित्यं लेपो वरांगयोः३२३

हे देवि! कबूतरकी वीट सैंधानोनके साथ पीस शहत मिलाय कामध्वजापर लेपकरै तो स्त्रीको वशीभूत करता है नित्य इस भाँति वराङ्गमें लेप करनेसे दम्पति परस्परमें प्रसन्न रहते हैं ॥ ३२३ ॥

कुर्याद्वशीकृतं यक्षधूपैश्च तिलकस्तथा ३२४॥

रालकी धूप देनेसे तथा तिलकसे भी परस्परमें वशीभूत रहते हैं ॥ ३२४ ॥

अथ जगद्वशीकरणम् ।

गोरोचना महादेवि ऋतुशोणितभाविता ।
तत्कृतस्तिलको यस्य स नरो यं निरीक्षते ॥
तञ्च सर्वं वशं कुर्यान्नात्र कार्या विचारणा३२५

हे पार्वती ! रजस्वला स्त्रीके रुधिरमें गोरोचनको घिसके तिलक करनेसे वह मनुष्य जिसको देखे उसको अपने वश करलेता है इसमें कुछभी संदेह नहीं३२५॥

मनःशिला त्वेकपला सागोरोचनकुंकुमा।
एभिस्तु तिलकं कुर्य्यात्तेन तस्य वशे जगत् ॥
सहदेवी भृंगराजः श्वेतापराजिता वचः।
एतैस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥
ॐ ह्रीं समासेयंसौभाग्यंगौरिदेहिमे ॥ ३२६ ॥

८ तोले मनशिलको गोरोचन और केशरमें मिलाय तिलक लगानेसे निःसन्देह मनुष्य जगत्को वशीभूत करलेता है सहदेवी, भांगरा और सफेद अपराजिता तथा वचको एकसाथ पीस "ॐह्रीं समासेयं सौभाग्यं गौरि देहि मे" इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर तिलक लगानेसे भी त्रिलोकीको वशीभूत करता है ॥ ३२६ ॥

गोदन्तं हरितालं च संयुतं काकजंघया ।
चूर्णं कृत्वा यच्छिरसि दीयते सवशोभवेत् ३२७

गोदंती, हरताल और काकजंघाको समान भाग मेलाय चूर्णकर जिसके शिरपर फेंके वही वशीभूत होताहै ॥ ३२७ ॥

श्वेतापराजितामूलं पिष्ट्वा रोचनया सह ।
यं पश्येत्तिलकं कुर्वन् वशीकुर्यान्न संशयः ३२८

सफेद अपराजिताकी जडको गोरोचनके साथ पीस नीचे लिखे मंत्रसे अभिमंत्रितकर तिलककर जिसे देखे वही वशीभूत होजाता है ॥ ३२८ ॥

अथ तिलककरणमन्त्रः ।

ॐ रक्तचामुण्डे अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।
ॐ द्रीं द्रौं द्रुं फट् ॥ इमं मंत्रम् अयुतं जपेत् ।
गोरोचनारक्तचन्दनतिलकेन वशी भवेत् ॥ ३२९ ॥

तिलक लगानेका मंत्र "ॐ रक्तचामुंडे अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॐह्रीं ह्रौं ह्रूं फट्" यह मंत्र १०००० जपनेसे सिद्ध होजाताहै, अपने रुधिरके साथ गोरोचनका तिलक लगानेसे वशीकरण होता है ॥ ३२९ ॥

भृङ्गराजस्य मूलं हि पिष्ट्वा शुक्रेण संयुतम् ।
अक्षिणीचाञ्जयित्वाचवशीकुर्य्याज्जगत्त्रयम् ३३०।

भांगरेकी जड़को अपने वीर्यके साथ कर नेत्रोंमें आँजनेसे त्रिलोकी वशीभूत होती है ॥ ३३० ॥

अथ मोहनम् ।

दण्डोत्पलं भृंगराजं श्वेतगोरोचनां नरः ।
पिष्ट्वा तु तिलकं कृत्वा मोहयेत्तु जगत्त्रयम् ३३१

भांगरा, दंडोत्पल और सफेद गोरोचनको एकसाथ पीसकर तिलक लगानेसे तीनों लोकोंको मोहित करता है ॥ ३३१ ॥

ॐसरसरॐॐस्वाहा। अनेन मन्त्रेण जलं सप्तवाराभिमन्त्रितम् ॥ प्रातश्चक्षुषि वै दत्त्वा मोहयेद्भुवनत्रयम् ॥ ३३२ ॥

"ॐ सरसर ॐ ॐ स्वाहा" इस मंत्रको सातवार पढ़कर जल अभिमंत्रित करै फिर प्रातःकाल उस जलसे नेत्रोंको धोवै तो त्रिलोकी मोहित होती है ॥ ३३२ ॥

अन्यच्च ॐ दण्डाय महादण्डाय स्वाहा ॥ इति मंत्रेण वस्त्रान्तिके ग्रंथिं बद्धा सर्व्वं मोहयेत् ॥ ३३३ ॥

"ॐ दंडाय महादंडाय स्वाहा" इस मंत्रको पढ़कर वस्त्रके आंचलमें गांठ बांधनेसे सब मोहित होजातेहैं ३३३

राजाप्रजाबन्धुबांधवश्याला मित्राणि परिक्षोभय यानियानि तानि तानि मोहय मोहय द्रींद्रींश्रींश्रींजगद्वशं भवतु स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेण मुखमार्ज्जनं कुर्य्यात्। तदा सर्वं वशं भवेत् ॥ ३३४ ॥

" राजा प्रजा बंधु बांधव शाला मित्राणि क्षोभय यानि यानि तानि तानि मोहय मोहय ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं जगद् वशं भवतु स्वाहा" इस मंत्रको पढ़कर मुँह धोनेसे सब वशीभूत होजाते हैं ॥ ३३४ ॥

ह्रींकारं सप्तधा प्रोच्य रसनारससंयुतम् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा राजानं वशमानयेत् ३३५

जो 'ह्रीं' इस मंत्रको पढ़कर (प्रीतिपूर्वक) जिह्वाके रससे तिलक करे तो राजाभी वशीभूत होता है ॥ ३३५ ॥

यस्य नाम गृहीत्वा तु मायाबीजं त्रिधा पठेत् ।
मुक्तकेशोर्द्धमुखश्चैव मुखमार्ज्जनमाचरेत् ॥
सत्यंसत्यं महादेवि स सर्व्वं वशमानयेत् ३३६

जिसका नाम लेकर तीनवार मायाबीजको पढ़े वह मोहित होजाता है, बालोंको खोल ऊपरको मुख करके मार्जन करनेसे हे महादेवि ! सभी वशीभूत होजाते हैं ॥ ३३६ ॥

अथ वीर्य्यजननम् ।

ईश्वर उवाच ।

अत्यम्लं लवणं क्षारं शाकानि कटु तिक्तकम् ।
शुष्कं पर्य्युषितञ्चैव यथेष्टं भोजनं त्यजेत् ३३७

शिवजी बोले—अत्यंत खट्टा, नोन, खारा, शाक, कड़वा, तीखा, सूखा और बासी पदार्थको न खाय ॥ ३३७ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं वीर्यकारणम् ।
यस्य भक्षणमात्रेण वृद्धोऽपि तरुणायते॥३३८॥

बलवीर्यकारण कहते हैं—जिन सब पदार्थोंके खानेसे वृद्धभी तरुण होजाता है ॥ ३३८ ॥

चूर्णं विदार्य्याः संस्कृत्य स्वरसेनैव भावितम् ।
शर्करामधुसर्पिर्भिर्युतं लिह्य पयः पिबेत् ॥
वृद्धो युवा भवेद्देवि सत्यंसत्यं न चान्यथा३३९

विदारीकंदका चूर्ण करके उसीके रसमें भावना दे फिर

चीनी शहत और घी मिलाकर उस चूर्णको दूधके साथ खाय तो वृद्ध भी निश्चय युवाकी समान होजाताहै३३९

विदारीकन्दचूर्णं तु घृतेन पयसा पिबेत् ।
उदुंबररसेनैव वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ३४० ॥

विदारीकंदका चूर्ण, घी और दूधके साथ अथवा गूलरके रसके साथ सेवन करे तो वृद्ध भी तरुणसमान होजाता है ॥ ३४० ॥

बीजंगोनवनीतेन संयुक्तं च प्रियं भवेत् ।
चूर्णं हन्ति हि वार्धक्यं महिषाणां वसा तथा ।
कृमियातां पातयेत्तु सफलं नात्र संशयः॥३४१॥

गूलरके बीज गायके मक्खनके साथ परम प्रिय वस्तु हैं, गूलरके बीज भैंसेकी चरबीके साथ सेवनकरे तो शीघ्र ही वृद्धतां नष्ट होजातीहै और कृमिनाशक है ॥३४१

विष्णुक्रांतामूलशिखां करे बद्ध्वा तु यो रमेत् ।
पट्टसूत्रेण वै देवि स्थिरवीर्य्यो भवेद्ध्रुवम् ३४२

जो मनुष्य अपराजिताकी जड़ और शिखाको रेशमी सूत्रद्वारा हाथमें बांधकर रमण करे तो उसका वीर्य निश्चय स्थिर हो ॥ ३४२ ॥

कृष्णायान्तु चतुर्दश्यां कट्यां बद्ध्वा समाहितः ।
हरेच्छाङ्गलिकामूलं सिंहे च मकरे दिवा ॥३४३॥

जो मनुष्य भादौं अथवा माघके महीनेमें कलिहारीकी जड़ लाकर कृष्णपक्षकी चतुर्दशीमें कमरमें बाँधे तो उसका वीर्य स्थिर हो ॥ ३४३ ॥

अथ बलवर्द्धनम् ।

आर्द्रकस्य च मूलञ्च कृत्तिकायां समुद्धरेत् ।
मुखे क्षिप्त्वा नरश्चापि यदा गच्छति कानने ॥
महाबलो महावीर्यो गजं हन्ति न संशयः३४४॥

कृत्तिका नक्षत्रमें अदरककी जड़ उखाड़कर मुखमें रख यदि वनमें जाय तो वह इतना बलवान् हो कि हाथीको भी मारडाले ॥ ३४४ ॥

अथ श्रुतिधारणम् ।

धात्रीमूलं समानीय तिलेन सह चूर्णयेत् ।
मासमेकं प्रगे भुक्ता नरः श्रुतिधरो भवेत् ३४५

आमलेकी जड़ लाकर तिलके साथ चूर्ण करे और प्रातःकाल उस चूर्णको १ मासतक खाय तो श्रुतिधर हो ॥ ३४५ ॥

अथ अस्त्रस्तंभनम् ।

मालमूलं समानीय हस्ते बद्धा गतो रणे ।
तस्य देहेषु शस्त्राणि कदाचिन्न पतन्ति च ३४६

मालतीकी जड़ उखाड़कर हाथमें बांध युद्धमें जाय तो उसके शरीरमें अस्त्रकी चोट नहीं लगे ॥ ३४६ ॥

अथ गात्रस्पन्दनकथनम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि गात्रस्पन्दनजं फलम् ।
यज्ज्ञात्वा च विजानीयाच्छुभाशुभफलंनरः ३४७

अब गात्रस्पंदनके फलको कहताहूँ जिसको जानकर मनुष्य शुभाशुभ फल विचार सकता है ॥ ३४७ ॥

शिरःस्पन्दनमैश्वर्यं ललाटे रोगकारणम् ।
लाभश्च दक्षिणे नेत्रे कलहो वामलोचने३४८॥

शिरके फड़कनेसे ऐश्वर्य हो, माथेके फड़कनेसे रोग हो, दहिनी आँख फड़कनेसे लाभ हो, बांई आँख फड़कनेसे लड़ाई हो ॥ ३४८ ॥

उभयोः शोकवार्त्ता च नसोर्मरणमेव च ।
ओष्ठे तु कलहश्चैव ह्यधरे मिष्टभोजनम्॥३४९॥

दोनों नेत्र एकसाथ फड़कनेसे शोकवार्ता मृत्युसमाचार आवे, होठ फड़कनेसे लड़ाई और अधर फड़कनेसे मीठा भोजन मिले ॥ ३४९ ॥

दन्तमूलस्पन्दनेनावश्यं मांसस्य भोजनम् ।
स्पंदने कर्णयोर्वापि संगीतश्रवणं फलम् ३५०

दांतकी जड़ फड़कनेसे मांसभोजन मिले, दोनों कान फड़कनेसे गीत सुने ॥ ३५० ॥

कंठे मारात्मके योगं कदाचिज्जीववद्भवेत् ।
अर्थलाभो दक्षभुजे स्त्रीलाभो वामके भुजे।३५१

कंठ फड़कनेसे मारात्मक रोग उत्पन्न हो, दहिनी भुजा फड़कनेसे धन मिलै और बांई भुजा फड़कनेसे स्त्री मिलै ॥ ३५१ ॥

लक्ष्मीवृद्धिर्दक्षपृष्ठे वामे च परदारकम् ।
श्रीवृद्धिरुभयोःकंपे नाभौ च मरणं भवेत् ३५२

दहनी पीठ फड़कनेसे धन बढ़े, बांई पीठ फड़कनेसे दूसरेकी स्त्री मिले, दोनों फड़कनेसे लक्ष्मीकी वृद्धि हो और नाभिके फड़कनेसे मृत्यु हो ॥ ३५२ ॥

दक्षकट्यां वस्त्रलाभो वामे मित्रसमागमम् ।
उत्सवो ह्युभयोः कट्योर्लिंगे च युवतीप्रिया३५३

दहनी कमर फड़कनेसे वस्त्रमिले; बांई कमर फड़कनेसे मित्रसे भेंट हो,दोनों कमर एकसाथ फड़कें तो उत्सव हो और लिङ्ग फड़कनेसे युवती स्त्री मिले ॥ ३५३ ॥

भूमिलाभो दक्षगंडे वामे बुद्धिरुभे धनम् ।
विदेशगमनं गुह्ये दक्षपादे नृपाद्भयम् ३५४ ॥

दहना गाल फड़कनेसे पृथ्वी मिले, बायाँ गाल फड़के तो बुद्धिलाभ हो, गुदा फड़कनेसे परदेशमें जाना हो और दहना पैर फड़कनेसे राजभय हो ॥ ३५४ ॥

वामपादे च गमनमुभयो राजसेवनम् ।
एवमंगस्पंदनस्य शुभाशुभफलं भवेत् ॥३५५॥

इति श्रीहरगौरीसंवादे गौरीकाञ्चलिका-
तंत्रं सम्पूर्णम् ।

बायां पैर फड़कनेसे मार्ग चलना पड़े और दोनों-पैरोंके एकसाथ फड़कनेसे राजसेवा प्राप्त हो। इस भाँतिसे अंग फड़कनेका शुभाशुभ फल होताहै ॥ ३५५ ॥

इति श्री मुरादाबादनिवासि पं. बाकेलालात्मज-
पण्डितश्यामसुन्दरलालत्रिपाठिकृत—
श्रीगौरीकाञ्चलिकातंत्रभाषाटीका सम्पूर्णा ।

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS